छबड़ा प्रकरण : हिन्दुओं को कब मिलेगा न्याय 12 | स्वदेशी जागरण का फ्री-वैक्सीन अभियान 14 | मद्रास हाईकोर्ट का निर्णय : हिन्दुओं के आयोजनों पर शर्त लगाना गलत 16

पाक्षिक

पाथेय कण

₹ 5

www.patheykan.com

Á¶îR H$.7, {d.2078, ¶JmãX 5123, 1 OZ, 2021

'द वीक' पत्रिका ने सावरकर के बारे में अपमानजनक लेख पर माफी मांगी

An article concerning Vinayak Damodar Savarkar, which was published in THE WEEK dated January 24, 2016, under the title 'Lamb Lionised' and mentioned in the contents page as 'Hero to Zero,' is misunderstood and giving rise to misinterpretation of the high stature of Veer Savarkar. We hold Veer Savarkar in high esteem. If this article has caused any personal hurt to any individual, we the management express our regret and apologise for such publication.

patheykan@gmail.com patheykan @patheykan1

सूचना

लॉकडाउन के कारण पाथेय कण का ई-अंक

नए सत्र 2021-22 में 1 अप्रैल का अंक ही सदस्यों को भेजा जा सका। 16 अप्रैल एवं 1 मई, 2021 का संयुक्तांक विशेषांक था (निधि समर्पण विशेषांक)। परन्तु छपकर आते-आते लॉकडाउन लग जाने के कारण उसका प्रेषण-कार्य कुछ दिन पूर्व ही समाप्त हुआ है। डाक से संभव नहीं हो पा रहा था। जिला केन्द्रों पर बण्डल भेजे गए हैं। अपने क्षेत्र के अंक जिला केन्द्रों से प्राप्त कर लेंगे तो सभी को सुविधा होगी। 16 मई का अंक लॉकडाउन के कारण मुद्रित नहीं हो पाया, अतः उसे 'ई-अंक' के रूप में ही प्रकाशित करना पड़ा है। जिनके Whatsapp पर यह अंक आ गया है, वे कृपया नीचे तक सदस्यों के Whatsapp पर इसे Post करने की कृपा करें।

यह 1 जून का अंक भी 'ई-अंक' ही रहेगा। इसको भी प्रत्येक सदस्य तक Whatsapp पर भेजने का अनुरोध है। कोरोना-महामारी हमारे सम्पर्क और सूचना तंत्र को न तोड़ पाए- ऐसा प्रयास हमें करना है। सभी को आदर सहित,

माणकचन्द, प्रबन्ध सम्पादक

पाथेय कण पोर्टल

पिछले 36 वर्षों (1985) से पाथेय कण पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। एक लाख से अधिक प्रसार संख्या वाली इस पत्रिका की पहुंच संपूर्ण देश सहित राजस्थान के आधे से अधिक गाँवों तक है। आज इंटरनेट का युग है, समाचार तेजी से प्रसारित होते हैं। अतः समय की मांग को देखते हुए एक न्यूज पोर्टल शुरू करने पर विचार किया गया। इस विचार को मार्च 2020 में मूर्त रूप दिया।

इसका उद्देश्य एक ऐसा प्लेटफॉर्म लाना था, जहां लोगों को अपराध व राजनीति से परे, मुख्य रूप से देश व समाज से सरोकार रखने वाले समाचार, विश्लेषणात्मक व वैचारिक लेख पढ़ने को मिलें। साथ ही नकारात्मक व विभाजनकारी समाचारों का वास्तविक पहलू भी पाठकों के सामने उजागर हो। पोर्टल का कलेवर ऐसा हो जिससे पाठकों का पूरा परिवार जुड़ाव का अनुभव करे। इसके लिए महिलाओं व बच्चों से जुड़ी रुचिकर पठन सामग्री देने का भी प्रयास किया गया है। प्रश्नोत्तरी, महापुरुष पहचानो, कविताएं व कहानियां जैसी श्रेणियां उसी की एक कड़ी हैं।

पोर्टल टीम - पाथेय कण पोर्टल की कोर टीम अवैतनिक है व स्वयंसेवी भाव से पोर्टल के लिए काम करती है। पोर्टल पत्रकारिता के नए छात्रों को कार्यानुभव व प्रोत्साहन राशि प्रदान कर उनके कौशल संवर्धन की दिशा में भी सक्रिय है। पोर्टल पर जाने के लिए https://patheykan.com को क्लिक करें।

सरकार ने बताया

कोरोना काल में

कैसा हो हमारा खान-पान

कोरोना के ठीक होने के बाद सामान्य दिनचर्या में आने में समय लगता है। अधिक लक्षणों वाले रोगी ठीक होने के पश्चात् कई दिनों तक कमजोरी व थकान का अनुभव करते हैं। ऐसे में शरीर को उचित पोषण देना आवश्यक हो जाता है। इसी का ध्यान रखते हुए सरकार ने एक बेसिक डाइट प्लान का सुझाव दिया है। यह डाइट रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, मांसपेशियों को शक्तिशाली बनाने तथा ऊर्जा को बनाए रखने में सहायक है। इसके अनुसार -

1. अपने दिन की शुरुआत भीगे बादाम और किशमिश खाकर करनी चाहिए। बादाम में पर्याप्त मात्रा में प्रोटीन और फाइबर होता है तथा किशमिश शरीर को आयरन प्रदान करती है।

2. नाश्ते में रागी (नाचनी, एक पौष्टिक अनाज) का डोसा या एक कटोरी दलिया खाना सबसे बेहतर विकल्प है। इससे शरीर को ऊर्जा मिलती है और थकान का अनुभव नहीं होता।

3. दोपहर के भोजन के दौरान या बाद में गुड़ और घी का सेवन करना अत्यंत लाभकारी है। पोषक तत्वों से भरपूर इस मिश्रण को रोटी के साथ भी खाया जा सकता है। गुड़ और घी खाने से शरीर की रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है।

4. रात को हल्का भोजन करना चाहिए। खिचड़ी खाना एक बेहतर विकल्प हो सकता है। खिचड़ी में सभी तरह के आवश्यक पोषक तत्व होते हैं।

5. इन सब के साथ ही शरीर को अच्छी तरह हाइड्रेट (शरीर में पानी की पर्याप्त मात्रा) रखना भी बहुत आवश्यक है। पर्याप्त पानी पीने के अलावा घर पर बने नींबू पानी और छाछ का नियमित सेवन करना चाहिए। इससे ताजगी बनी रहती है और शरीर में जमा विषाक्त पदार्थ बाहर निकल जाते हैं।

अन्य सुझाव - इनका भी प्रयोग करें-

- प्रोटीन के लिए दूध, पनीर, सोया, सूखे मेवे व बीज, अंडे, मछली आदि
- वसा के लिए सरसों व जैतून तेल, अखरोट, रागी, ओट्स जैसे साबुत अनाज
- नियमित शारीरिक गतिविधि जैसे योग, प्राणायाम आदि
- रंगीन फल व सब्जियां (विटामिन व खनिज तत्वों के लिए)
- कम मात्रा में डार्क चॉकलेट
- हल्दी मिला दूध

(MyGovindia के ट्विटर हैंडल से)

पाक्षिक
पाथेय कण

ज्येष्ठ कृ.7-ज्येष्ठ शु.5
वि.सं.2078, युगाब्द 5123

1-15 जून, 2021
वर्ष 37 : अंक 04

सम्पादक
रामस्वरूप अग्रवाल

सह सम्पादक
मनोज गर्ग

प्रबंध सम्पादक
माणकचन्द

सह प्रबंध सम्पादक
ओमप्रकाश

अक्षर संयोजन
कौशल रावत

सहयोग राशि
एक वर्ष ₹ 150/-
पन्द्रह वर्ष ₹ 1500/-

प्रबंधकीय कार्यालय
'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर-302017 (राज.)
मो. 9929722111

अंक नहीं मिलने की सूचना अपने नाम व पते सहित व्हाट्सएप (WhatsApp) द्वारा निम्नलिखित मो.न. पर दें।
7976582011

E-mail : patheykan@gmail.com
Website : www.patheykan.in

तथ्यों को झुठलाता - मोदी विरोध

पिछले कुछ दिनों से मोदी विरोधी लॉबी के लेखक-पत्रकार एक विमर्श (Narrative) स्थापित करने का प्रयास कर रहे हैं कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के पतन की शुरूआत हो गई है। मोदी न केवल कोरोना महामारी का मुकाबला करने में असफल हो गए हैं, बल्कि गत दिनों पाँच विधानसभाओं के चुनावों में भी उनकी पराजय हो गई है।

चूंकि कोरोना की दूसरी लहर भारत में अचानक आ गई थी, लोग बड़ी संख्या में संक्रमित होने लगे तथा कई स्थानों पर ऑक्सीजन व रेमडेसिविर की कमी भी हो गई। यह लहर ज्यादा मारक थी। ऐसे में मोदी विरोधी विमर्श (Narrative) स्थापित करने वाली लॉबी के साथ शेष मीडिया भी बह गया- ऐसा लगता है।

जहां तक कोरोना से संक्रमित होने व कालकलवित होने की बात है, यह सबके लिए चिंता एवं दुःख का विषय था और है। परन्तु जिस तरह इसे मीडिया ने उछाला- वह दुखद था। समाज के सम्पन्न तबके के लोग जिन्हें ऑक्सीजन, रेमडेसिविर वगैरह सहित सर्वश्रेष्ठ इलाज उपलब्ध था, ऐसे लोग भी हमसे बिछुड़ रहे थे। मृत्यु-दर कम हो या ज्यादा,वह दुखदायी है परन्तु आज भी दुनियां के विकसित देशों से, जहां सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा सुविधा उपलब्ध होने का दावा किया जाता है, भारत की तुलना करके देख लीजिए। आबादी को ध्यान में रखिएगा। एक समाचार पत्र ने अमेरिका के राष्ट्रपति व उपराष्ट्रपति की खिलखिलाते हुए की तस्वीर छाप कर शीर्षक दिया-'शाबाश अमेरिका'। शाबाशी इस बात की दी जा रही थी कि उसने अपनी आबादी के 46 प्रतिशत को वैक्सीन लगा दी है। समाचार के अंत में भारत का भी उल्लेख था कि मात्र 10% को वैक्सीन लगी है। परन्तु अमेरिका की 33 करोड़ आबादी का 46% होता है 15 करोड़ और भारत की 140 करोड़ आबादी का 10% होता है 14 करोड़, अर्थात् अमेरिका में 15 करोड़ वैक्सीन लगाई गई और भारत में 14 करोड़ परन्तु अमेरिका को शाबाशी और भारत के प्रति हेय दृष्टि! अमेरिका में 700 शव दफनाने के इंतजार में ट्रकों में कई दिनों से भरे होने का समाचार कुछ दिन पहले का ही है। ब्रिटेन में फिर कोरोना फैलने के कारण कई देशों ने वहां से आने वाले विमानों पर रोक लगा दी है। तो यह महामारी है, कब, कहाँ, क्या रूप ले- क्या पता, कृपया भारत को बदनाम करना बंद करें।

और फिर कोरोना महामारी के दौरान व्यवस्था में जो भी कमी थी, उसके जिम्मेदार क्या केवल मोदी ही हैं? प्रत्येक राज्य में राज्य-सरकारें हैं। क्या उनकी कोई जिम्मेदारी व भूमिका नहीं थी? मजेदार बात तो यह है कि **'लोक स्वास्थ्य और स्वच्छता, अस्पताल और औषधालय'** - यह विषय संविधान में 'राज्य सूची के क्रमांक 6 पर दिया हुआ है, अर्थात् इस विषय के संबंध में व्यवस्था करने की जिम्मेदारी राज्य सरकारों की होगी। परन्तु मीडिया सारा दोष मोदी पर ही डाल रहा है। यह विषय केन्द्र सूची में तो दूर-दूर तक भी नहीं है। इतना ही नहीं, निम्नांकित विषय भी राज्यसूची में ही हैं जिनकी कोरोना को फैलाने में बड़ी भूमिका रही है-

प्रविष्टि-1. लोक व्यवस्था, यानि किसी भी प्रकार के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक समारोह, सभा आदि पर रोक लगाने या उसे नियंत्रित करने का कार्य राज्य सरकार का है। लोग भीड़ न करें इसकी व्यवस्था राज्य सरकार को ही करनी है।

प्रविष्टि- 7. तीर्थ यात्राएं

प्रविष्टि-26. उद्योग

प्रविष्टि-28. बाजार और मेले

कोरोना की पहली लहर के उतार पर होने के समय बाजारों में व साप्ताहिक हटवाड़ों में लोग बिना मास्क भीड़ लगा रहे थे। विवाह समारोह में 100 व्यक्तियों तक रहने के आदेश निकाले गए, परन्तु कितने अधिकारी या जनप्रतिनिधि निरीक्षण करने पहुँचे? 500 से 1000 व्यक्तियों तक ने विवाह समारोह में भाग लिया। यह सब देखने का काम क्या राज्य सरकारों का नहीं था?

परन्तु नहीं जी, मीडिया के अनुसार राज्य सरकार की कोई जिम्मेदारी नहीं है। जिम्मेदारी सारी मोदी की ही है। स्थिति कुछ दिन नियंत्रण के बाहर रही तो मोदी फेल हो गया।

कितने देशों में वैक्सीन का उत्पादन हो रहा है? बताइए जरा गिन कर। यह मोदी ही थे जो वैक्सीन उत्पादन के लिए कब से प्रयासरत थे। भारत में वैक्सीन का निर्माण होने के कारण ही समय पर उपलब्ध हो सकी तथा उसकी कीमत भी कम है। बाहर से आने वाली वैक्सीन एक हजार से ज्यादा कीमत की ही है। अब फिर कोरोना नियंत्रण में आ रहा है, तो इसका श्रेय किसको देंगे? वैक्सीन को पेटेंट-फ्री करने की पहल भी मोदी सरकार ने WTO में दिसम्बर 2020 में कर दी थी।

और चुनावों में हार? कैसे-कैसे लेख छापे जा रहे हैं? **'फीका पड़ा कमल'**, **'चूकता ब्रह्मास्त्र'** और कैसी कैसी टिप्पणी? देखिए एक बानगी-**''विधानसभा चुनावों में निराशाजनक नतीजों ने ब्रांड मोदी पर भाजपा की निर्भरता को लेकर सवाल खड़े किए।''** असम में भाजपा पुनः सत्तारूढ़ हो गई है- यह कुछ नहीं, इसके लिए भी भाजपा को श्रेय नहीं। इसकी भी चर्चा कैसे की जा रही है-''भाजपा गठबंधन ने असम में दूसरा कार्यकाल हासिल कर लिया है पर पड़ोस के घटना क्रम ने इस जीत को फीका कर दिया।'' यानि आपकी सोच पश्चिम बंगाल तक सीमित कर दी। ये संदर्भ हिन्दी पत्रिका 'इंडिया टूडे' से लिए गए हैं। एक अंग्रेजी पत्रिका 'The Week' के शीर्षक या टिप्पणियाँ देखिए-

BJP's dismal show in assembly election

(विधान सभा चुनावों में भाजपा का निराशाजनक प्रदर्शन)

Fading Saffron (फीका पड़ता भगवा)

Dented image of the PM

(प्रधानमंत्री की धूमिल होती छवि)

उपरोक्त उदाहरण मात्र दो पत्रिकाओं के हैं।

वास्तविकता तो यह है कि भाजपा पिछले विधानसभा चुनावों की तुलना में इस बार आगे बढ़ी है देखिए जरा आंकड़े-

राज्य	2016में जीती सीटें	2021में जीती सीटें	परिणाम
असम	60	60	सत्ता में वापसी (मत प्रतिशत भी बढ़ा)
पुडुचेरी	0	6	पहली बार बीजेपी गठबंधन सत्ता में आया
तमिलनाडु	0	4	20 वर्ष तक एक भी सीट नहीं थी
पश्चिम बंगाल	3	77	वोट प्रतिशत 10.16 से बढ़कर 38.13 हुआ
केरल	1	0	राज्य में कभी प्रभावी नहीं थी, परन्तु मत प्रतिशत इस बार बढ़ा है

इन परिणामों से स्पष्ट है कि कहीं से भी भाजपा इन विधानसभा चुनावों में पीछे नहीं गई, वरन् गत चुनावों की तुलना भी कहीं बहुत आगे बढ़ी है। पहले एक राज्य में सत्तारूढ़ थी, अब दो राज्यों में है। पहले दक्षिण के राज्य तमिलनाडु व पुडुचेरी में एक भी सीट नहीं थी, अब एक राज्य में 4 तो दूसरे में सत्तारूढ़ हो रही है। जहां तक केरल का प्रश्न है, वहां यथा स्थिति वाला मामला है। फिर भी लिखा जा रहा है-'' विधान सभा चुनावों में भाजपा का निराशाजनक प्रदर्शन!''

मोदी विरोधी लॉबी का कहना है कि भाजपा पश्चिम बंगाल में हार गई। कहते थे 200 से ज्यादा सीटों पर जीतेंगे। बड़ी विचित्र बात है। क्या कहा था पर जोर है, क्या प्राप्त किया इस पर नहीं। 3 से 77 पर पहुँचना क्या कम उपलब्धि है? प.बंगाल में 13 सीटें ऐसी थी जिन पर हार का अंतर नोटा के वोट से कम रहा। 70 सीटें ऐसी हैं जहां हार का अंतर 300 से 5000 तक रहा। सीएम ममता बनर्जी स्वयं नंदीग्राम से चुनाव हार गईं।

परन्तु नहीं साहब, आखिर विमर्श (Narrative) तो 'मोदी के पतन' का बनाना है ना? इसलिए बंगाल के विधान सभा चुनाव की तुलना 2019 में वहां हुए लोकसभा चुनाव से करने लगे। मतदाता अनेक राज्यों में लोकसभा और विधान सभा चुनावों में भिन्न पार्टियों को जिताता आया है। इसका सबसे अच्छा उदाहरण है दिल्ली का -

2014 के लोकसभा चुनाव में सभी सात सीटों पर बीजेपी जीती, आप पार्टी- शून्य
2015 के विधान सभा चुनावों में आप पार्टी को 70 में से 67, भाजपा मात्र 3
2019 में लोकसभा की सभी सातों सीटें भाजपा को, आप पार्टी- शून्य
2020 के विधान सभा चुनाव में फिर आप पार्टी जीती, 70 में से 62, भाजपा मात्र 8

कौन लोग हैं ये जो जनता को भ्रमित कर रहे हैं? जनता को इनकी पहचान करना आवश्यक है। क्या ये लोग अपने 'पत्रकारिता धर्म' का निर्वाह कर रहे हैं? जनता को अपने विवेक के आधार पर निर्णय लेना होगा। ये लोग राष्ट्रीय पुनर्जागरण के भी विरोधी है। इनका एक मात्र लक्ष्य है- भारत के सनातन विचार, भारत की संस्कृति तथा दर्शन-चिंतन को प्रभावी न होने देना। राष्ट्रवादी शक्तियों की बढ़त इन्हें अच्छी नहीं लगती है। परन्तु अब लोग जागरूक हैं और इनके विमर्श (Narrative) को स्वीकार करने के मूड में नहीं हैं। ●

ज्ञान गंगा

अति साहसमतिदुष्करमत्याश्चर्यं च दानमर्थानाम्।
योऽपि ददाति शरीरं न ददाति स वित्तलेशमपि ।।

समाज की सेवा और उन्नति के लिये धन संपत्ति का दान करना एक अत्यन्त कठिन, साहसिक तथा प्रशंसनीय कार्य है। परन्तु कुछ (लोभी और कंजूस) व्यक्ति चाहे अपनी जान दे देंगे लेकिन अपनी संपत्ति का लेशमात्र अंश भी दान नहीं करते हैं।

प्रसार सारावली (सुभाषितरत्नाकर)

स्वतंत्र और अखण्ड भारत के आराधक - वीर सावरकर

छगन लाल बोहरा

28 मई, उस महान क्रांतिकारी विनायक दामोदर सावरकर का जन्मदिन है जिसने अपने भाइयों सहित अपना तन, मन, धन, जीवन मातृभूमि की स्वतंत्रता के यज्ञ में स्वाहा कर दिया।

अध्ययन के साथ-साथ देश की स्वतंत्रता के लिए क्रांतिकारी गतिविधियाँ, लेखन, जन-जागरण और युवकों को संगठित करने का उनका कार्य सतत चलता रहा। उनकी उत्कट देशभक्ति और बौद्धिक क्षमता ने लोकमान्य तिलक को बहुत प्रभावित किया। उन्होंने श्यामजी कृष्ण वर्मा द्वारा प्रदत्त छात्रवृत्ति से विनायक को लन्दन भेजने की व्यवस्था की।

बचपन से मातृभूमि भारत और उसकी स्वतंत्रता विनायक सावरकर के रोम-रोम और श्वास-श्वास में बसी हुई थी। छात्रवृत्ति के आवेदन में वे लिखते हैं ''स्वाधीनता और स्वराज्य को मैं राष्ट्र की श्वास और धड़कन की तरह आवश्यक मानता हूँ। बाल्यकाल से युवावस्था तक अपने देश की परतंत्रता की बेड़ियाँ तोड़ कर स्वतंत्रता प्राप्ति का एकमात्र स्वप्न मैं दिन-रात देखता आ रहा हूँ।''

तरुण अवस्था में ही अपने पैतृक गांव भगूर में कुल देवी की प्रतिमा के सामने विनायक ने भारत माता को स्वतंत्र कराने हेतु अपना जीवन अर्पण करने की प्रतिज्ञा की। चाफेकर बन्धुओं की फांसी ने सावरकर को बहुत उद्वेलित किया।

नासिक और पूना में पढ़ाई के दौरान उन्होंने देशभक्त विद्यार्थियों का एक संगठन ''मित्रमेला'' के नाम से गठित किया, जिसके सदस्य भारत माता की स्वतंत्रता के लिए अंग्रेज सत्ता को उखाड़ फेंकने हेतु

'द वीक' पत्रिका ने सावरकर के बारे में अपमानजनक लेख के लिए माफी मांगी

'द वीक' पत्रिका का माफीनामा

(अंक - 23 मई,2021)

'' विनायक दामोदर सावरकर से संबंधित एक लेख 'द वीक' में 24 जनवरी, 2016 को Lamb Lionised (मेमना शेर की तरह महामंडित) शीर्षक से प्रकाशित हुआ था जिसमें उनके लिए Hero to Zero (नायक से शून्य) उल्लेख किया गया, इसे गलत समझा गया और इसके कारण वीर सावरकर जैसे उच्च सम्मानित के प्रति गलत धारणा बनी। हम वीर सावरकर का अत्यधिक सम्मान करते हैं। इस लेख ने यदि किसी व्यक्ति को पीड़ा पहुँचाई है तो हमें (प्रबंधन को) इसके लिए पछतावा है और उक्त प्रकाशन के लिए हम क्षमा प्रार्थी हैं।''

अंग्रेजी की साप्ताहिक पत्रिका 'द वीक' ने आज से 5 वर्ष पूर्व वीर सावरकर के बारे में पत्रिका में प्रकाशित अपमानजनक लेख के लिए अब माफी मांग ली है।

24 जनवरी,2016 को 'द वीक' में एक लेख Lamb Lionised (मेमना शेर की तरह महामंडित) शीर्षक से प्रकाशित हुआ था, जिसे एक पत्रकार निरंजन टकले ने लिखा था। लेखक ने एक इतिहासकार शम्सुल इस्लाम को उद्धृत करते हुए सावरकर के बारे में अभद्र टिप्पणी की थी।

सावरकर के पौत्र तथा 'स्वातंत्र्यवीर सावरकर राष्ट्रीय स्मारक' के कार्याध्यक्ष रणजीत सावरकर ने उक्त पत्रिका के प्रबन्ध संपादक, संपादक, मुद्रक व प्रकाशन के विरुद्ध मानहानि का आपराधिक मुकदमा न्यायालय में दर्ज कराया और कहा कि सावरकर को बदनाम करने के लिए जानबूझ कर तथ्यों की अनदेखी की गई। भारतीय दण्ड संहिता (आईपीसी) की धारा 34, 500, 501 तथा 502 के अंतर्गत आपराधिक मामला दर्ज किया गया। रणजीत सावरकर ने कहा, ''मैं उन्हें कानून के अनुसार दण्डित कराना चाहता हूँ, ताकि सावरकर के बारे में कोई भी व्यक्ति झूठे तथ्य लिखने की हिम्मत न करे।''

मुकदमा 5 साल से चल रहा है। अब तक 21 सुनवाइयां हुई हैं। दिसम्बर, 2019 में आरोपियों को निजी मुचलके पर जमानत मिली। आरोपियों ने शायद मुकदमे के परिणाम को भांप लिया है, इसलिए मुकदमे में निर्णय से पूर्व ही प्रबंधन ने माफी मांग ली है।

जो लोग एक समुदाय विशेष का तुष्टीकरण करने के लिए विनायक सावरकर जैसे देशभक्त के लिए आज भी अभद्र भाषा बोलते हैं, क्या वे इस प्रकरण से कुछ सबक लेंगे?

सशस्त्र संघर्ष करने और देश के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर करने की शपथ लेते थे। देशभक्ति से ओतप्रोत भाषण, गीत, कविताएँ, महान क्रांतिकारियों के जीवन प्रसंगों का वाचन, गणेश उत्सव, शिवाजी जन्मोत्सव आदि के माध्यम से ''मित्रमेला'' के सदस्यों में क्रांति की भावना और समझ बढ़ाने के प्रयास किये जाते थे।

यही 'मित्रमेला' आगे चलकर 1904 में ''अभिनव भारत'' के नाम से भारत के प्रमुख क्रांतिकारी संगठन के रूप में विकसित हुआ जिसने स्वतंत्रता संग्राम को अनेक प्रसिद्ध क्रांतिकारी, उत्कट देशभक्त, नेता और लेखक दिये। सावरकर ने अंग्रेजों के भारत पर अवैध व अन्याय पूर्ण शासन

इटली के क्रांतिकारी मेजिनी की जीवनी और '1857 का स्वातंत्र्य समर' उन्होंने मराठी में लिखी। फिर उनके अनुवाद अंग्रेजी, हिंदी और अन्य भाषाओं में छपे, जिन्होंने देशभक्ति का तूफान खड़ा किया। अंग्रेज सरकार ने छपने से पहले ही प्रतिबंध लगा दिया, परन्तु गुप्त रूप से पुस्तकें छपीं और हजारों प्रतियाँ वितरित हुईं।

के खिलाफ भारतीयों के वैधानिक व तर्कपूर्ण संघर्ष को विश्व के सामने एक नये रूप में प्रस्तुत किया। 1906 से 1910 तक अंग्रेजों की राजधानी लन्दन में रह कर उन्होंने भारत की स्वतंत्रता के लिए जो संघर्ष छेड़ा वह अद्वितीय है।

सावरकर अत्यंत मेधावी व गहन अध्ययनशील युवक थे। भारत के ही नहीं, विश्व के इतिहास और विश्व भर में चल रही क्रांतिकारी गतिविधियों की उन्हें विशद् जानकारी थी। अनेक देशों के प्रमुख क्रांतिकारियों ने उन्हें प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष सहयोग किया। कई गुप्त संगठन उन्हें अपना आदर्श मानते थे। भाई परमानन्द, लाला हरदयाल, मैडम भीकाजी कामा, वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय, मदनलाल धींगड़ा, चम्पक रमण पिल्लई जैसे प्रसिद्ध देशभक्त उनके सहयोगी थे।

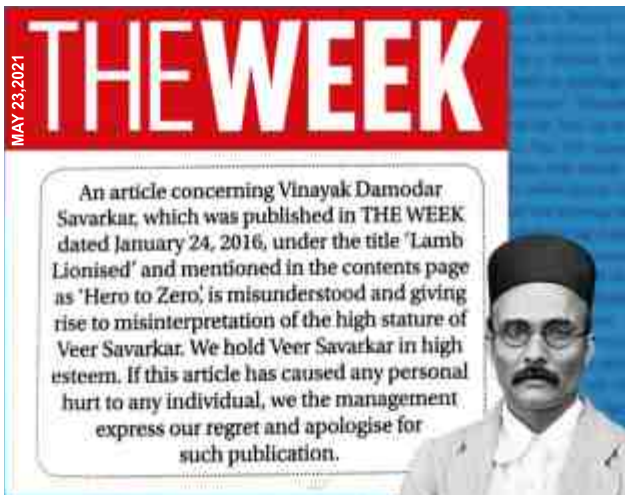

क्रांतिकारी मदनलाल धींगड़ा ने भारतीयों पर अत्याचार करने वाले कर्जन वायली को सजा देने के लिए भरी सभा में गोली से उड़ा दिया था। कोर्ट में बयान देते हुए उसने सिंह की तरह गरजते हुए कहा ''यह अंग्रेजों के खिलाफ स्वाधीनता का युद्ध है। यह तब तक जारी रहेगा जब तक अंग्रेज भारत छोड़ कर चले नहीं जाते। भारतमाता की जय बोलते हुए वह वीर फांसी पर चढ़ गया।

गुलाम मानसिकता वाले खुशामदी भारतीयों ने आगा खाँ की अध्यक्षता में मदनलाल धींगड़ा की भर्त्सना का एक प्रस्ताव प्रस्तुत किया और कहा कि ''यह सभा सर्वसम्मत्ति से धींगड़ा द्वारा कर्जन वायली को गोली मारने के कृत्य की निन्दा करती है।'' तभी सभा में बैठे युवक विनायक दामोदर सावरकर का धीर, गंभीर और रोष भरा स्वर गूंजा, ''नहीं, सर्वसम्मत्ति से नहीं।'' मैं इस प्रस्ताव का विरोध करता हूँ। मदनलाल धींगड़ा द्वारा कर्जन वायली को भारतीयों पर किये गये अत्याचारों के लिए दी गई सजा का समर्थन और उसके इस वीरता पूर्ण कृत्य के लिए अभिनन्दन करता हूँ।'' सारी सभा अवाक् रह गई युवक सावरकर की इस सिंह गर्जना की धमक न केवल इंग्लैण्ड बल्कि सारे विश्व में सुनायी पड़ी। वे क्रांतिकारियों के आदर्श नायक बन गये।

1906 में लन्दन पहुंचने के थोड़े ही समय में सावरकर ने अपने स्वभाव के अनुसार वहां भी देशभक्त विद्यार्थियों का संगठन Free India Society नाम से गठित कर लिया। प्रति सप्ताह इसकी मीटिंग में भारत की स्वतंत्रता के लिए युवकों को मानसिक रूप तैयार करने हेतु देशभक्ति पूर्ण भाषण होते थे। महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी, गुरु गोविन्दसिंह जैसे महापुरुषों की जयन्तियाँ, दशहरा आदि अवसरों पर युवकों में देशभक्ति और भारत की स्वतंत्रता के लिए कटिबद्ध होने की प्रेरणा दी जाती थी। हथियार चलाना, बम बनाना आदि का प्रशिक्षण दिया जाता था। विश्व में चल रहे स्वतंत्रता आन्दोलनों और उसके नायकों के विषय में जानकारी दी जाती। रूस, फ्रांस, इटली, आयरलैण्ड के क्रांतिकारियों और विशेष रूप से 1857

उस महान देशभक्त क्रांतिकारी के अतुलनीय संघर्ष और बलिदान गाथा को हाशिए पर ढकेलने और भारतीय जनमानस से मिटाने के प्रयास करने वाले तथाकथित राजनेताओं और इतिहासकारों को सावरकर की वीरता पर प्रश्न खड़ा करने से पहले अंग्रेज सरकार द्वारा उन पर लगाये गये अभियोगों को अवश्य जान लेना चाहिये कि वे अंग्रेजों के लिए कितना बड़ा खतरा थे।

के स्वातंत्र्य समर और उसके नायकों के वीरतापूर्ण कार्यों के विषय में सावरकर के भाषण होते थे।

इटली के क्रांतिकारी मेजिनी की जीवनी और ''1857 का स्वातंत्र्य समर'' उन्होंने मराठी में लिखी। फिर उनके अनुवाद अंग्रेजी, हिंदी तथा अन्य भाषाओं में छपे, जिन्होंने देशभक्ति का तूफान खड़ा किया। अंग्रेज सरकार ने छपने से पहले ही प्रतिबंध लगा दिया, परन्तु गुप्त रूप से पुस्तकें छपीं और हजारों प्रतियाँ वितरित हुईं।

10 मई, 1907 के दिन 1857 की क्रांति की स्वर्ण जयंती लन्दन में बड़े समारोह पूर्वक आयोजित कर सावरकर ने सरकार द्वारा इसे गदर के रूप में प्रचारित करने के षड्यंत्र का पर्दाफाश किया तथा सिद्ध किया कि यह ''स्वराज्य'' की प्राप्ति और ''स्वधर्म'' की स्थापना के लिए भारत की जनता द्वारा लड़ा गया स्वतंत्रता संग्राम था।

10 मार्च, 1910 को लन्दन में सावरकर की गिरफ्तारी, आयरिश क्रांतिकारियों द्वारा पुलिस दल पर हमला कर उन्हें छुड़ाने के प्रयास, भारत लाये जाते वक्त मार्सेल्स (फ्रांस) के तट पर जहाज से कूद कर बचने की विश्व प्रसिद्ध घटना, मुंबई लाकर मुकदमे का नाटक, दो आजन्म काला पानी की सजा और 2 जुलाई, 1921 तक अण्डमान के रौरव नरक में अंग्रेजों द्वारा दी गई अमानवीय यातनाएँ रोंगटे खड़े कर देने वाली विश्व प्रसिद्ध क्रांति गाथा है जो देश के बच्चे-बच्चे के लिए पठनीय और अनुकरणीय है।

उस महान देशभक्त क्रांतिकारी के अतुलनीय संघर्ष और बलिदान गाथा को हाशिए पर ढकेलने और भारतीय जनमानस से मिटाने के प्रयास करने वाले तथाकथित राजनेताओं और इतिहासकारों को सावरकर की वीरता पर प्रश्न खड़ा करने से पहले अंग्रेज सरकार द्वारा उन पर लगाये गये अभियोगों को अवश्य जान लेना चाहिये कि वे अंग्रेजों के लिए कितना बड़ा खतरा थे-

1. ब्रिटिश सम्राट को प्रभुसत्ता से वंचित करने का प्रयास।
2. भारत में अंग्रेजी शासन के विरुद्ध षड्यंत्र।
3. अवैध अस्त्र-शस्त्रों का संग्रह और वितरण।
4. कर्जन वायली व जैक्शन की हत्या की प्रेरणा देना।
5. लन्दन में अस्त्र-शस्त्र इकट्ठा करना व भारत भेजना।
6. 1906 तक भारत में तथा लन्दन में 1909 तक राजद्रोहात्मक भाषण देना।

दो आजन्म काले पानी की सजा देते हुए अंग्रेज जज ने लिखा

"We find the accused guilty of the abetment of war by instigating the circulation of printed matter inciting to war... it amounts to declaration of war against British Government."

सावरकर के लेखन को अपने शासन के लिए बहुत बड़ा खतरा मानते हुए अंग्रेज सरकार ने बार-बार प्रतिबंधित किया। विषम परिस्थितियों में इतना विपुल लेखन करने वाले सावरकर एक मात्र क्रांतिकारी थे।

सेल्यूलर जेल में सावरकर का कमरा

जो लोग उन्हें मुस्लिम विरोधी कहते हैं उन्हें ''1857 का स्वातंत्र्य समर'' पढ़ना चाहिये, जिसमें मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं के साथ कंधे से कंधा मिला कर अंग्रेजों से लड़ने की भूरी-भूरी प्रशंसा की गई है और यही हिन्दू-मुस्लिम एकता वे स्वतंत्र तथा अखण्ड भारत में भी चाहते थे। भारत माता के प्रति निष्ठा रखने वाले सभी भारतीयों को समान अधिकार, तुष्टिकरण किसी का भी नहीं और मुसलमानों सहित सभी के भारतीयकरण के पक्षधर थे।

वे बचपन से अखण्ड भारत के आराधक थे तथा मातृभूमि की अखण्डता पर किसी प्रकार की आंच उन्हें असह्य थी। ''आसिंधु सिंधु पर्यन्ता यस्य भारत भूमि'' उनकी आराध्या देवी थी।

मुसलमानों में अलगाव की भावना को हवा देने की कांग्रेस और अंग्रेजों की नीति का उन्होंने सदैव विरोध किया। सत्ता पाने के लोभ में विभाजन स्वीकार कर लेने के लिए उन्होंने तत्कालीन नेताओं को कभी माफ नहीं किया। भारत माता के खण्डित स्वरूप का शूल जीवन की अंतिम श्वास तक उन्हें सालता रहा। ''हे सुरसेविनी, पुण्य सलिला मां सिंधु ! तुझे हम कैसे भुला दें। तीन चौथाई भारत मुक्त हुआ है, परन्तु मेरी सिंधु नदी तथा सिंधु प्रदेश छीन लिये गये हैं। हम अपनी सिंधु को भूल नहीं सकते। सिंधु रहित हिन्दू अर्थात् अर्थ रहित शब्द, निष्प्राण देह, यह सब असंभव है, व्यर्थ हैं।''

विनायक सावरकर का स्पष्ट मत था कि विभाजन भारत के किसी भी हिस्से के लिए शुभ नहीं है वरन् यह दोनों के लिए सतत् संघर्ष और आत्मघाती द्वेष का बीजारोपण है। समस्या का समाधान हिन्दू-मुसलमान सभी के भारतीयकरण में है। ●

– क्षेत्रीय संगठन मंत्री,भारतीय इतिहास संकलन योजना, राजस्थान क्षेत्र

प.बंगाल में हिंसा

देशभर में हो रहा है विरोध

राजस्थान के 108 विशिष्टजनों द्वारा राष्ट्रपति को भेजा गया ज्ञापन

2000 महिला अधिवक्ताओं ने सर्वोच्च न्यायालय में प्रस्तुत की याचिका

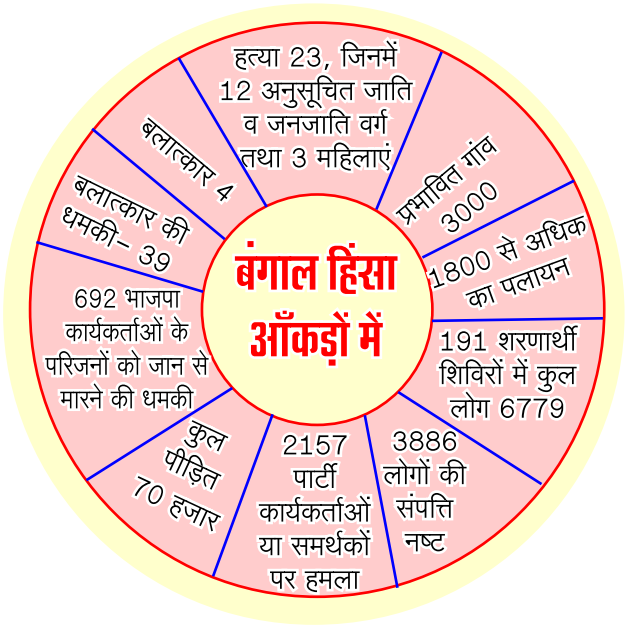

प. बंगाल में विधानसभा चुनाव पश्चात् एक विशेष समुदाय के लोगों द्वारा हिन्दुओं पर लगातार हो रहे हमले तथा मारपीट, आगजनी, तोड़फोड़, हत्या व बलात्कार की घटनाओं ने देश को हिलाकर रख दिया है।

राष्ट्रपति को ज्ञापन – राजस्थान के विभिन्न व्यवसाय व जाति-बिरादरी के प्रमुख 108 लोगों के हस्ताक्षर से महामहिम राष्ट्रपति के नाम लिखित एक ज्ञापन राजस्थान के राज्यपाल श्री कलराज मिश्र को भेजते हुए प. बंगाल में हिंसा को तत्काल रोकने, हिंसा के जिम्मेदार लोगों को दण्डित करने तथा हिंसा पीड़ितों को पर्याप्त मुआवजा सहित सुरक्षा उपलब्ध कराने की मांग की गई है।

राष्ट्रपति को भेजे गए ज्ञापन पर हस्ताक्षरकर्ता

राज. के अतिरिक्त मुख्य सचिव (सेवानिवृत्त) ओपी सैनी सहित पूर्व प्रशासनिक, पुलिस व अन्य सेवा के अधिकारी यथा बीएल गुप्ता, संजय दीक्षित (जयपुर डायलॉग के अध्यक्ष), आरएन अरविंद,चन्द्रशेखर, ताराचंद सहारण, ओपी गुप्ता, निष्काम दिवाकर, एससी व्यास, भगवान सिंह, एके ओझा, महेन्द्र कुमार अग्रवाल, गुंजन सक्सेना, प्रवीण खण्डेलवाल, महेन्द्र कुमार नागदा, रामकृपा शर्मा एवं कन्हैया लाल बैरवा(आईपीएस एवं अम्बेडकर पीठ के पूर्व महानिदेशक), राजस्थान उच्च न्यायालय अधिवक्ता परिषद के अध्यक्ष नाथूसिंह राठौड़, राज.बार काउन्सिल के सदस्य देवेन्द्र सिंह व रणजीत जोशी, राज.बार काउन्सिल के पूर्व अध्यक्ष कोटा के महेश चन्द्र गुप्ता, राज. उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति प्रशान्त कुमार अग्रवाल, पूर्व न्यायिक अधिकारी रामनिवास जाट एवं अशोक सक्सेना, महाधिवक्ता या अतिरिक्त महाधिवक्ता जैसे पदों पर कार्य कर चुके व अन्य वरिष्ठ अधिवक्ता नरपत मल लोढ़ा, जगमोहन सक्सेना, जीएस गिल, अनिल कुमार राजवंशी, धर्मवीर ढोलिया, मनोज गौतम, राजेन्द्र, अनुराग शर्मा एवं श्यामसुन्दर लदरेचा, पद्म श्री से सम्मानित अर्जुन सिंह शेखावत व श्यामसुंदर पालीवाल, पूर्व सैन्य अधिकारी कर्नल देव आनंद, ले.क.अनिमेश त्रिवेदी, सीडीआर बनवारी लाल व शिवराज सिंह राठौड़, द्रोणाचार्य पुरस्कार से सम्मानित रिपुदमन सिंह, अर्जुन पुरस्कार विजेता अपूर्वी चंदेल, गोपाल सैनी, दीनाराम यादव, सुरेन्द्र कटारिया व सुरेश मिश्रा, अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी जसवंत सिन्हा, नीतिका, राहुल जांगिड़, हीरानंद कटारिया, विराट पंत, जाह्नवी मेहरा, निर्मलेश माथुर एवं रामावतार सिंह जाखड़, पूर्व कुलपति व अन्य शिक्षाविद् जेपी सिंघल, प्रो.कैलाश सोडाणी, प्रो.जेपी शर्मा, डॉ.लोकेश शेखावत, प्रो. पीके दशोरा, प्रो.आरके कोठारी, डॉ.बीआर छीपा, प्रो.एमएल छीपा, प्रो.अशोक शर्मा, प्रो.बीएल चौधरी, प्रो.हाकमदान चारण, प्रो.एमएल कालरा, डा. उमाशंकर शर्मा एवं प्रो.केसी शर्मा, राज.लोकसेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष आरएस गर्ग, अनुसूचित जाति सहित विभिन्न समाज व संस्थाओं के प्रमुख यथा ताराचंद जारोल (अति.मुख्य अभियन्ता सेनि.), डॉ.अम्बेडकर सोसाइटी, राज.के अध्यक्ष भजन लाल, रिजर्व बैंक के सेनि. प्रबंधक बद्रीनारायण, डॉ.जीआर भील, पीडब्लूडी के अति सीई(सेनि.) मिश्रीमल, डॉ. सहीराम मीणा (पूर्व आईआरएस), बीएम मीणा, डॉ.अम्बेडकर मेमोरियल वेलफेयर सोसाइटी के प्रदेश उपाध्यक्ष बीएल भाटी, स्टेट बैंक के सेनि. उप प्रबंधक ओपी शर्मा, डॉ.मूलाराम कडेला (बाल चिकित्सा के वरिष्ठ विशेषज्ञ), नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के अध्यक्ष प्रशान्त अग्रवाल, इसरो(जोधपुर) के पूर्व प्रमुख डॉ.जेआर शर्मा तथा राजस्थान के प्रमुख पत्रकार व स्तम्भ लेखक यथा एसपी मित्तल, जितेन्द्र सिंह शेखावत, गोपाल शर्मा, तुलसीराम महावर, विनय भार्गव, गुलाब बत्रा, राजीव हर्ष, लोकपाल सेठी, राजेश कसेरा, अनन्त झा आदि।

ज्ञापन में कहा गया है कि इस हिंसा के कारण न केवल लोकतंत्र के आधारभूत सिद्धान्त 'स्वतंत्र चुनाव' को गहरी चोट पहुँची है, वरन संविधान के अनुच्छेद 21 में निहित 'गरिमामय जीवन के अधिकार' का व्यापक स्तर पर हनन हुआ है। वहां नागरिकों के जीवन, संपत्ति व अधिकारों की रक्षा करने के पवित्र दायित्व से राज्य शासन विमुख हो रहा है।

ज्ञापन में अब तक हुई हिंसा का व्यापक ब्यौरा भी दिया गया है। ज्ञापन पर कई पूर्व कुलपतियों सहित 18 शिक्षाविदों, 18 प्रशासनिक अधिकारियों, 20 न्यायिक अधिकारियों व वरिष्ठ अधिवक्ताओं, 6 सेना के पूर्व अधिकारियों व पद्मश्री प्राप्त, 15 पदक विजेता खिलाड़ियों, 13 वरिष्ठ पत्रकारों सहित अनुसूचित जाति-जनजाति व अन्य समाजों के 22 प्रमुख लोगों ने हस्ताक्षर किए हैं।

महिला अधिवक्ताओं द्वारा सर्वोच्च न्यायालय में याचिका

देशभर की दो हजार से अधिक महिला अधिवक्ताओं ने बंगाल में हो रही हिंसा के विरुद्ध ऑनलाइन हस्ताक्षर कर, पूरे हिंसा-मामलों को प्रलेखित करते हुए, एक याचिका उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति के समझ प्रस्तुत की है।

यचिका में बंगाल में महिलाओं के साथ हो रहे दुष्कर्म, दुर्व्यवहार तथा प्रताड़ना पर रोष प्रकट किया गया है तथा विधि शासन को स्थापित करने की मांग करते हुए नागरिक सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाए जाने हेतु निवेदन किया गया है।

याचिका में राजस्थान से उदयपुर की अलका जोशी, ऋतु सारस्वत, मंजू हाड़ा, डूंगरपुर की स्वाति पारीक, कोटा की सोनल विजय, राजसमंद की सीमा जैन, बांसवाड़ा की हेमलता, चित्तौड़गढ़ की सुमित्रा सहित 150 से अधिक महिला अधिवक्ताओं ने हस्ताक्षर किए हैं। ●

बंगाल हिंसा : हमें अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी होगी

हिंसा पाप है, परन्तु कायरता महापाप है

प्रणय कुमार

सरकारों के दम पर न तो कभी कोई लड़ाई लड़ी जाती है और न जीती जाती है। सभ्यता के सतत संघर्ष में अपने-अपने हिस्से की लड़ाई या तो स्वयं या संगठित समाज-शक्ति को ही लड़नी होगी।

''ध्रुवीकरण के कारण पश्चिम बंगाल में हिंसा हो रही है, लोग मारे जा रहे हैं, महिलाएँ दुष्कर्म की शिकार हो रही हैं।'' ऐसा विश्लेषण करने वालों से मेरा सीधा सवाल है कि यदि आपकी बहन-बेटी-पत्नी को सामूहिक दुष्कर्म जैसी नारकीय यातनाओं से गुज़रना पड़ता, यदि आपके किसी अपने को राज्य की सत्ता से असहमत होने के कारण प्राण गंवाने पड़ते, क्या तब भी आपका ऐसा ही विश्लेषण होता?

सोचकर देखिए, आप 'सामूहिक दुष्कर्म' जैसे शब्द सुन भी नहीं सकते, उन्होंने भोगा है। बोलने से पहले सोचें। कुछ बातों का राजनीति से ऊपर उठकर खंडन करना सीखें। बौद्धिकता का यह दंभ सनातनी-समाज की सबसे बड़ी दुर्बलता है। 'नहीं जी, मैं उससे अलग हूँ।' कि 'मैं तो भिन्न सोचता हूँ।' कि 'मैं तो मौलिक चिंतक हूँ।' कि 'मैं तो उदार हूँ।' देखो, 'मैं तो तुम्हारे साथ हूँ, उनके साथ नहीं'... आदि-आदि!

जुनूनी-मज़हबी भीड़ यह नहीं सोचती कि आप किस दल के समर्थन में थे? कि आप उनके साथ खड़े थे! आपको निपटाने के लिए आपका सनातनी होना ही पर्याप्त होगा। कश्मीरी पंडित किस ध्रुवीकरण के कारण मारे और खदेड़ दिए गए? वहाँ किसने उकसाया था? पाकिस्तान और बांग्लादेश में लाखों लोग किस ध्रुवीकरण के कारण काट डाले गए? मोपला, नोआखली के नरसंहार क्या ध्रुवीकरण की देन थे? भारत-विभाजन क्या ध्रुवीकरण के कारण हुआ? क्या उस ध्रुवीकरण में सनातनियों की कोई भूमिका थी? गाँधी क्या ध्रुवीकरण कर रहे थे? क्या वे केवल बहुसंख्यकों के नेता थे? ग़जनी, गोरी, अलाउद्दीन, औरंगजेब, नादिरशाह, तैमूर लंग जैसे तमाम हत्यारे शासक और आक्रांता क्या ध्रुवीकरण की प्रतिक्रिया में हिंदुओं-सनातनियों का नरसंहार कर रहे थे?

काशी-मथुरा-अयोध्या-नालंदा-सोमनाथ का विध्वंस क्या ध्रुवीकरण के परिणाम थे? यक़ीन मानिए, इससे निराधार और अतार्किक बातें आज तक नहीं सुनी गईं!

सच तो यह है कि ऐसा विश्लेषण करने वाले विद्वान या तो कायर हैं या दोहरे चरित्र वाले! किसी-न-किसी लालच या भय में उनमें सच को सच कहने की हिम्मत नहीं! बल्कि जो लोग दलगत राजनीति से ऊपर उठकर पश्चिम बंगाल की हिंसा, अराजकता, लूटमार, आगजनी, सामूहिक दुष्कर्म जैसे नृशंस एवं अमानुषिक कुकृत्यों पर एक वक्तव्य नहीं जारी कर सके, अपने सोशल

मीडिया एकाउंट पर ऐसे कुकृत्यों का पुरजोर खंडन नहीं कर सके, वे भी ऊँची मीनारों पर खड़े होकर मोदी–योगी–भाजपा को ज्ञान दे रहे हैं। यदि किसी को लाज भी न आए तो क्या उसे निर्लज्जता की सारी सीमाएँ लाँघ जानी चाहिए! मुझे कहने दीजिए कि ढीठ और निर्लज्ज हैं आप, इसलिए पश्चिम बंगाल की राज्य–पोषित हिंसा पर ऐसी टिप्पणी, ऐसा विश्लेषण कर रहे हैं।

हिंसा पाप है, परन्तु कायरता महापाप है। कोई भी केंद्रीय सरकार या प्रदेश सरकार भी आपकी हमारी बहन–बेटी–पत्नी की मर्यादा बचाने के लिए, चौबीसों घंटे हमारी जान की सुरक्षा के लिए पहरे पर तैनात नहीं रह सकती। उस परिस्थिति में तो बिलकुल भी नहीं, जब किसी प्रदेश की पूरी–की–पूरी सरकारी मशीनरी राज्य की सत्ता के विरोध में मत देने वालों से बदले पर उतारू हो! इसलिए आत्मरक्षा के लिए हमें–आपको ही आगे आना होगा। भेड़–बकरियों की तरह ज़ुनूनी–उन्मादी–मज़हबी भीड़ के सामने कटने के लिए स्वयं को समर्पित कर देना महा कायरता है। इससे जान–माल की अधिक क्षति होगी। इससे मनुष्यता का अधिक नुकसान होगा। शांति और सुव्यवस्था शक्ति के संतुलन से ही स्थापित होती है।

जो कौम दुनिया को बाँटकर देखती है, उनके लिए हर समय ग़ैर–मज़हबी लोग एक चारा हैं। जिस व्यवस्था में उनकी 30 प्रतिशत भागीदारी होती है, उनके लिए सत्ता उस प्रदेश को एक ही रंग में रंगने का मज़बूत उपकरण है। गज़वा–ए–हिंद उनका पुराना सपना है। वे या तो आपको वहाँ से खदेड़ देना चाहेंगे या मार डालना। लड़े तो बच भी सकते हैं। भागे तो अब समुद्र में डूबने के अलावा और कोई विकल्प नहीं बचा!

हम सनातनियों की सबसे बड़ी दुर्बलता है कि हम हमेशा किसी–न–किसी अवतारी पुरुष या महानायक की बाट जोहते रहते हैं। ईश्वर से गुहार लगाते रहते हैं। आगे बढ़कर प्रतिकार नहीं करते, शिवा–महाराणा की तरह लड़ना नहीं स्वीकार करते। यदि जीना है तो मरने का डर छोड़ना पड़ेगा।

सरकारों के दम पर कभी कोई लड़ाई नहीं लड़ी व जीती जाती। सभ्यता के सतत संघर्ष में अपने–अपने हिस्से की लड़ाई या तो स्वयं या संगठित समाज–शक्ति को ही लड़नी होगी।

मुट्ठी भर लोग देश के संविधान, पुलिस–प्रशासन, क़ानून–व्यवस्था को ठेंगे पर रखते आए हैं, पर हम–आप केवल अरण्य–रोदन रोते रहे हैं! संकट में घिरने पर इससे–उससे प्राणों की रक्षा हेतु गुहार लगाते रहे हैं! बात जब प्राणों पर बन आई हो तो उठिए, लड़िए और मरते–मरते भी असुरों का संहार कीजिए। आप युद्ध में हैं, युद्ध में मित्रों की समझ भले न हो, पर शत्रु की स्पष्ट समझ एवं पहचान होनी चाहिए। याद रखिए, युद्ध में किसी प्रकार की द्वंद्व–दुविधा, कोरी भावुकता–नैतिकता का मूल्य प्राण देकर चुकाना पड़ता है! इसलिए उठिए, लड़िए और अंतिम साँस तक आसुरी शक्तियों का प्रतिकार कीजिए। हमारे सभी देवताओं ने असुरों का संहार किया है। आत्मरक्षा हेतु प्रतिकार करने पर कम–से–कम आप पर हमलावर समूह में यह भय तो पैदा होगा कि यदि उन्होंने सीमाओं का अतिक्रमण किया, अधिक दुःसाहस किया या जोश में होश गंवाया तो उनके प्राणों पर भी संकट आ सकता है! ●

निःस्वार्थ सेवा के लिए तत्पर

पवन कुमार

जब कोरोना के कारण काल का ग्रास बनी युवा पत्नी का अंतिम संस्कार करके पति घर आया तो अपने 8 साल के बच्चे को गले नहीं लगा पाया, क्योंकि स्वयं कोरोना पॉजिटिव था। तब घर को संभालने के लिए,उस युवा के आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए और मातृत्व प्रेम खो चुके बच्चों को आत्मीयता देने के लिए देवदूत रूप में सार–संभाल के लिए आगे आए संघ के स्वयंसेवक! ऐसे ना जाने कितने ही परिवारों की पूर्ण बंधु भाव से आत्मीयता पूर्ण संभाल कर रहे हैं स्वयंसेवक ।

जब समाज में भय का वातावरण बन गया था तो सेवा रूपी यज्ञकुंड में स्वयं को होम करने के लिए चाहे अंतिम संस्कार करना हो या अस्पताल की सफाई करनी हो, हर मोर्चे पर अग्रिम पंक्ति में स्वयंसेवक नजर आते हैं।

जब एक मिशन में लगे लोग जो कि स्वयंसेवक ही हैं एक सपेरा बस्ती में लॉकडाउन लगने के बाद हालचाल पूछने गए तो एक अम्मा ने लगभग रोते हुए बताया कि मैं और मेरी पोती दो दिन से दो–दो ब्रेड खाकर गुजारा कर रहे हैं तो तुरंत ही तंत्र को सक्रिय कर संपूर्ण बस्ती को 400 पैकेट भोजन प्रतिदिन पहुंचाना प्रारंभ कर दिया। अभावों की पूर्ति ही सेवा है इसको हर स्वयंसेवक अपने व्यवहार और आचरण में प्रत्यक्ष करता नजर आता है।

इस महामारी के दौर में भी सेवा के इन भावों के प्रत्यक्ष दर्शन कई जगह हुए, जैसे जयपुर में आयुष 64 की दवाई का वितरण हो, या भीलवाड़ा में होम्योपैथिक

रामगंजमंडी में स्वयंसेवकों द्वारा अंतिम संस्कार

दवाई की 60 हजार शीशियों का निर्माण और वितरण हो, या नागौर में ग्रामीण स्तर तक आयुर्वेदिक काढ़ा पिलाने का काम हो, या स्वच्छता के लिए कोटा सहित लगभग सभी प्रमुख नगरों में सैनेटाइजेशन की व्यवस्था हो, या बूंदी में जरूरतमंदों की पूर्ति के लिए चलाया गया 'राम जी का रसोड़ा' हो, या फिर प्रत्येक संभाग स्तर पर चलाया गया ऑक्सीजन कॉन्संट्रेटर केंद्र हो, इन सभी जगहों पर स्वयंसेवक बढ़-चढ़ कर सभी प्रकार की गतिविधियों को संपन्न कर रहे थे।

राजस्थान के सबसे बड़े कोविड़ केयर सेंटर आरयूएचएस में भी संघ के 50 स्वयंसेवक पिछले 28 दिन से चार पारियों में सहायता केंद्र चला रहे हैं। स्वयं अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख स्वांतरंजन और क्षेत्र प्रचारक निंबाराम ने वहां पहुंच कर स्वयंसेवकों का हौंसला बढ़ाया तथा आस-पास की निर्धन बस्ती में भोजन पैकेट वितरण करने का सुझाव भी दिया ।

व्यापक सेवा कार्य

देश भर में स्वयंसेवकों ने संक्रमित व्यक्तियों और परिवारों को 3315 स्थानों पर लगभग 6 लाख भोजन पैकेट, 3800 स्थानों पर हेल्पलाइन नंबर, कुल 7476 बेड के कोविड सेंटर और लगभग 5000 चिकित्सकों की सहायता से लगभग 1लाख 50 हजार लोगों को चिकित्सा संबंधी परामर्श दिया है, 426 स्थानों पर प्लाज्मा डोनेट किया गया, 1256 स्थानों पर 44 हजार यूनिट रक्त दान किया। लगभग 816 स्थानों पर अंतिम संस्कार की भी व्यवस्था स्वयंसेवकों द्वारा की गई।

कर्नाटक के कोलार स्थान पर वर्षों से धूल फांक रहे एक 800 बेड की क्षमता वाले विशाल अस्पताल की सफाई और मरम्मत करके 10 दिन में उस जर्जर से हो चुके अस्पताल को पुनः उपयोग के लिए तैयार कर दिया।

तूफान में गिरे पेड़ों को उठाते हुए स्वंयसेवक

तूफान पीड़ितों की सेवा-सहयोग

ऐसा कहते हैं जब विपदा आती है तो अकेली नहीं आती। ऐसा ही कुछ भारत के साथ हुआ। इस महामारी के साथ ही ताऊते नामक तूफान ने भारत के समुद्रतटीय क्षेत्रों को भी झकझोर कर रख दिया। अकेले सौराष्ट्र क्षेत्र में इसकी विनाश लीला इतनी थी कि 17000 घर नष्ट हुए, 9000 किमी की बिजली लाइन कट गई, हजारों लोग बेघर हुए भटक रहे थे। ऐसे में तुरंत ही स्वयंसेवक सक्रिय हुए। 17 अप्रैल रात्रि को तूफान का खौफनाक मंजर देखा सभी ने, परन्तु 18 अप्रैल प्रातः देवदूतों की सहायता का दृश्य सर्वदूर दिखाई दे रहा था। राशन किट, चाय-नाश्ता, पेयजल की व्यवस्था और पुनर्वास के लिए आवासों की मरम्मत, साथ ही साथ अस्पतालों में ऑक्सीजन की आपूर्ति निर्बाध चलती रहे इसलिए मार्ग की सभी बाधाओं को दूर करने में स्वयंसेवक तत्परता से जुट गए।

योग शिविर व अन्य

केवल अभावों की पूर्ति ही नहीं अपितु शारीरिक रूप से समाज का प्रत्येक व्यक्ति स्वस्थ रहे इसके लिए जयपुर प्रांत के द्वारा ऑनलाइन योग शिविर भी 7 दिन के लिए लगातार चलाया गया, जिसमें प्रतिदिन सुबह और शाम को विभिन्न प्रकार के योगों के माध्यम से शरीर को किस प्रकार से इस दौर में सुरक्षित और स्वस्थ रखा जा सकता है यह बताया गया।

बारां में 'सेवा की बात आपके साथ' नामक कार्यक्रम से समाज को संबल प्रदान किया गया। चित्तौड़ प्रांत द्वारा सेवा कार्य में लगे कार्यकर्ताओं के उत्साहवर्धन और अन्य शेष को प्रेरणा देने हेतु 'पंच यज्ञ से परम वैभव' विषय पर बौद्धिक का आयोजन किया जिसमें सुरेश जी सोनी का मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

भारतीय सिंधु सभा, अजमेर द्वारा बालकों को कुछ सकारात्मक करने को मिले इसलिए 8 से 18 वर्ष के विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन मिट्टी कला स्पर्द्धा का आयोजन किया गया।

समाज रूपी देवता को अपना आराध्य मानकर निरंतर उसी का हित चिंतन करना और उसके हर सदस्य को अपना आत्मीय बंधु मानकर जब-जब समाज को आवश्यकता महसूस हुई तब-तब स्वयंसेवक स्वप्रेरणा से बिना किसी के बुलाए समाज की आवश्यकता पूर्ति के लिए लग जाता है, बिना किसी पद प्रतिष्ठा की चाह के, और बदले में किसी भी प्रकार की कामना नहीं रख कर समाज के लिए सर्वस्व होम करने की सिद्धता देख कर ही RSS (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ) को किसी ने Ready for Selfless Service की संज्ञा से विभूषित किया है तो यह उचित ही है। ●

छबड़ा हिंसा व लूटपाट प्रकरण

'6 सप्ताह से ज्यादा बीत जाने पर भी कार्रवाई नहीं'

पीड़ित हिन्दुओं को कब मिलेगा न्याय?

लोगों में सरकार और प्रशासन के प्रति बढ़ता जा रहा है आक्रोश

छबड़ा के धरनावदा चौराहे पर फलों के ठेले से फल खरीद रहे कमल सिंह की कहासुनी तीन युवकों– फरीद, आबिद और समीर हो गयी थी। कारण बताया गया कि मोटर साइकिलें टकरायी थीं। छोटी सी बात थी, परन्तु मुस्लिम युवकों ने कमल सिंह पर चाकुओं से हमला कर दिया।

सामूहिक हमला

दूसरे दिन 11 अप्रैल को जब इस मामले को दर्ज कराकर प्रशासन को ज्ञापन दिया जा रहा था, उसी दौरान मुस्लिम समुदाय के लोगों ने एकत्र होकर हिन्दू व्यापारियों की दुकानों पर धावा बोल दिया। दुकानों में लूटपाट की गई और कई दुकानों को आग लगा दी। इससे व्यापारियों को करोड़ों रुपयों का नुकसान हुआ। पीड़ित व्यापारी नरेश कालरा, अतुल जैन, योगेन्द्र आदि ने बताया कि लगभग 100–150 उपद्रवियों की भीड़ थी, जिनके हाथों में धारदार हथियार, तलवारें व ज्वलनशील पदार्थ थे।

प्रत्यक्ष प्रमाण के बावजूद कार्रवाई नहीं

इस घटना के सीसीटीवी फुटेज हैं, मोबाइल रिकॉर्डिंग हैं, फोटो हैं। पीड़ित पक्ष ने नामजद एफआईआर दर्ज करायी है। इसके बावजूद पुलिस प्रशासन द्वारा कोई कार्रवाई न किए जाने पर विरोध स्वरूप छबड़ा क्षेत्र 8 दिनों तक पूर्ण बंद रहा। प्रशासन ने अपनी नाकामी छिपाने के लिए कर्फ्यू लगा दिया। उल्टे इस घटना पर आक्रोश व्यक्त करने वाले बजरंग दल तथा विहिप के कई कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर उनके विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया गया।

हिन्दु समाज आक्रोशित

इससे पूरे हिन्दू समाज में आक्रोश व्याप्त है। विश्व हिन्दू परिषद के आह्वान पर सम्पूर्ण बारां जिले को आधे दिन के लिए बंद रखा गया।

अनूठा विरोध प्रदर्शन

कोरोना लॉकडाउन को देखते हुए हिन्दू समाज ने 23 अप्रैल को एक अनूठे तरीके से अपने आक्रोश को व्यक्त किया। इसके अंतर्गत हिन्दू परिवारों ने अपने घर की चौखट, सीढ़ियों या चबूतरों पर एकत्र होकर अपने हाथों में मांगे लिखी तख्तियाँ, झंडिया व पताकाएं उठाकर प्रदर्शन किया। यह प्रदर्शन पूरे बारां शहर के साथ ही जिले के कई नगरों, कस्बों व गाँवों में एक साथ सुबह आठ बजे किया गया। पूरा हिन्दू समाज उस दिन घर के बाहर आकर अपना आक्रोश व्यक्त कर रहा था। तख्तियों पर उपद्रवियों को गिरफ्तार करने, हिन्दू समाज के लोगों पर झूठे मुकदमे वापस लेने, व्यापारियों को हुए नुकसान की भरपाई दंगाइयों से कराने आदि मांगे लिखी हुई थीं। इस विरोध प्रदर्शन में 5 हजार परिवारों ने अपनी सहभागिता प्रकट की। प्रदर्शन में व्यापार महासंघ, हास्य क्लब, राणा प्रताप सेवा संघ, योग क्लब सहित बारां के लगभग सभी समाज– संगठनों का सहयोग रहा।

3 मई को छबड़ा नगर व तहसील के ग्रामीण क्षेत्र के हजारों परिवारों ने इसी तरह का प्रदर्शन किया। सप्ताह में कम से कम एक बार यह अनूठा प्रदर्शन अभी भी किया जा रहा है।

उपद्रवियों द्वारा आगजनी और तोड़ फोड़

17 अप्रैल को विश्व हिन्दू परिषद ने बारां में एक पत्रकार वार्ता का आयोजन करते हुए दंगाइयों को गिरफ्तार करने की मांग की। राजस्थान क्षेत्र के मंत्री सुरेश चंद्र ने बताया कि विहिप के पदाधिकारियों को बाजार में हुई हानि का अवलोकन तक नहीं करने दिया गया।

विद्यार्थी परिषद ने घटना के विरोध में प्रांत सहमंत्री कोमल मीणा के नेतृत्व में बारां में प्रताप चौक पर प्रदर्शन किया, वहीं बजरंग दल ने भी नगर संयोजक मानवेन्द्र प्रताप के नेतृत्व में चारमूर्ति चौराहे पर विरोध प्रदर्शन कर दोषियों को गिरफ्तार करने की मांग की। मांगरोल में जुगल मीणा के नेतृत्व में उपखंड कार्यालय पर अभाविप द्वारा प्रदर्शन किया गया। माली समाज ने माली-सैनी यूथ फोरम के जिलाध्यक्ष कैलाश सुमन के नेतृत्व में घटना के विरोध में जिला कलेक्टर को राज्यपाल के नाम ज्ञापन दिया।

3 मई को पीड़ित व्यापारियों की ओर से राजस्थान के राज्यपाल के नाम उपजिला कलेक्टर मनीषा तिवारी को ज्ञापन दिया गया। लगातार दबाव के चलते पुलिस ने 4 मई को मुख्य आरोपियों में से एक राजेश खान को गिरफ्तार कर लिया। यह राजेश खान कांग्रेस के पूर्व जिलाध्यक्ष निजामुद्दीन का भतीजा है। अभी भी शेष आरोपियों को पुलिस गिरफ्तार नहीं कर रही है। दुकानों में लूट व आगजनी से पीड़ित व्यापारियों द्वारा 24 मई को अनिश्चितकालीन धरना देने हेतु जाते समय पुलिस द्वारा व्यापारियों को ही गिरफ्तार करने के समाचार भी हैं।

ट्विटर पर ट्रेंड हुआ

इस घटना के विरोध स्वरूप 5 मई को एक ट्विटर ट्रेंड भी चला। इसमें लोगों का मानना था कि यह गंभीर विषय भी शासन-प्रशासन द्वारा राजनीतिक तुष्टीकरण जैसे षड्यंत्र की भेंट चढ़ा दिया गया। उक्त ट्विटर ट्रेंड देश भर में उस दिन प्रथम स्थान पर रहा जिसमें 35 हजार ट्वीट किए गए। जिस घटना को प्रशासन दबाने का प्रयास कर रहा था, उसकी जानकारी सोशल मीडिया के माध्यम से पूरे देश को हो गई।

हिन्दू समाज चुप नहीं रहेगा

हिन्दू सुरक्षा समिति के संरक्षक प्रताप सिंह नागदा ने बताया कि अब हिन्दू समाज चुप नहीं बैठेगा। जब तक निर्दोष हिन्दुओं पर लगे झूठे मुकदमे वापस नहीं होंगे, व्यापारियों को मुआवजा नहीं मिलेगा तथा दंगाई गिरफ्तार नहीं होंगे तब तक हिन्दू सुरक्षा समिति द्वारा एक नए स्वरूप में प्रतिदिन सरकार व प्रशासन के विरुद्ध प्रदर्शन जारी रहेगा। हिंसा के दौरान प्रशासन जिस प्रकार मूक दर्शक बना रहा तथा हिंसा के बाद दंगाइयों को गिरफ्तार करने के बजाय पीड़ित हिन्दू समाज के कुछ लोगों को गिरफ्तार किया गया इन-सबसे भी कई सवाल खड़े होते हैं, जिनके उत्तर तलाशना आवश्यक है। ●

श्रद्धांजलि

संवित् सोमगिरिजी महाराज का देवलोक गमन

राजस्थान के जाने-माने शंकरी परम्परा के महान संत संवित् सोमगिरि जी महाराज का 78 वर्ष की उम्र में 18 मई की रात्रि कोरोना से निधन हो गया। उनके अनुयायियों द्वारा बैकुंठी निकालकर बीकानेर स्थित आश्रम परिसर में ही उन्हें भू-समाधि दी गई।

मूल रूप से इंजीनियर रहे सोमगिरि जी महाराज ने 23 वर्षों तक अर्बुदांचल की तपोभूमि में वेदांत का अध्ययन करते हुए गहन साधना की। वे बीकानेर के शिवबाड़ी स्थित श्री लालेश्वर मठ के अधिष्ठाता थे। आपने देशभर में गीता ग्रंथ के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए अनूठा कार्य करते हुए एक विशेष पहचान बनाई। वे संघ की धर्म जागरण समन्वय गतिविधि के कार्यों में सदैव सहयोग करते रहे। हरिद्वार में आयोजित 'साधु स्वाध्याय संगम' में भी सभी को आपका मार्गदर्शन प्राप्त हुआ था। पाथेय कण रजत जयंती समारोह समिति के आप संरक्षक थे। रा.स्व.संघ व विहिप ने वर्चुअल माध्यम से श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। **पाथेय कण परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।**

ताकि सबको उपलब्ध हो कोरोना-टीका

स्वदेशी जागरण मंच का पेटेंट फ्री वैक्सीन के लिए अभियान

कोरोना का टीका (वैक्सीन) सबके लिए सुर्वसुलभ हो, इसके लिए स्वदेशी जागरण मंच ने 'पेटेंट-फ्री वैक्सीन' हेतु अभियान चलाया है। लाखों लोगों के हस्ताक्षर वाली याचिकाएं WTO (विश्व व्यापार संगठन), विभिन्न देशों के राष्ट्राध्यक्षों एवं वैक्सीन बनाने वाली कम्पनियों को भेजने का यह अभियान राजस्थान में भी आरम्भ हो गया है। क्या आपने इस याचिका पर हस्ताक्षर कर दिए हैं?

आइए जरा पेटेंट के चक्कर को समझा जाए। किसी भी व्यक्ति या कम्पनी द्वारा कोई नया उत्पाद बना लेने पर उसे अपने उत्पाद का 'पेटेंट' कराने का अधिकार होता है। पेटेंट मिल जाने का परिणाम होता है कि उस उत्पाद के निर्माण का अधिकार उसी व्यक्ति या कम्पनी को होगा। हाँ, वह पेटेंटधारी व्यक्ति या कम्पनी किसी अन्य को भी उस उत्पाद के निर्माण की अनुमति (लाइसेंस) दे सकती है, परन्तु इसके लिए पेटेंटधारी उससे अच्छी-खासी धनराशि (रॉयल्टी) लेता है।

अब वैक्सीन के पेटेंट की बात लें। किसी भी दवा कम्पनी को वैक्सीन बनाने के लिए शोध कार्य कराना होता है, इसके लिए प्रयोगशाला (लैब) और अन्य

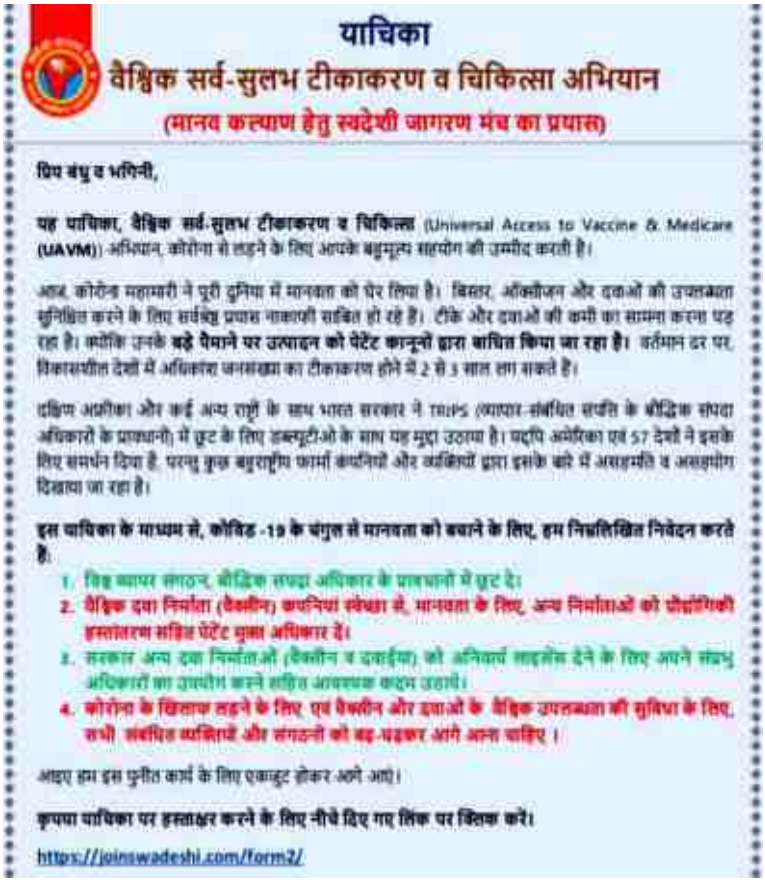

याचिका

वैश्विक सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा अभियान

(मानव कल्याण हेतु स्वदेशी जागरण मंच का प्रयास)

प्रिय बंधु व भगिनी,

यह याचिका, वैश्विक सर्व-सुलभ टीकाकरण व चिकित्सा (Universal Access to Vaccine & Medicare (UAVM)) अभियान, कोरोना से लड़ने के लिए आपके बहुमूल्य सहयोग की उम्मीद करती है।

आज, कोरोना महामारी ने पूरी दुनिया में मानवता को घेर लिया है। विशेष, ऑक्सीजन और दवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए सर्वत्र प्रयास नाकाफी साबित हो रहे हैं। टीके और दवाओं की कमी का सामना करना पड़ रहा है। क्योंकि उनके बड़े पैमाने पर उत्पादन को पेटेंट कानूनों द्वारा बाधित किया जा रहा है। वर्तमान दर पर, विकासशील देशों में अधिकांश जनसंख्या का टीकाकरण होने में 2 से 3 साल लग सकते हैं।

दक्षिण अफ्रीका और कई अन्य राष्ट्रों के साथ भारत सरकार ने TRIPS (व्यापार-संबंधित संपत्ति के बौद्धिक संपदा अधिकारों के पहलुओं) में छूट के लिए डब्ल्यूटीओ के साथ यह मुद्दा उठाया है। यद्यपि अमेरिका एवं 57 देशों ने इसके लिए समर्थन दिया है, परन्तु कुछ बहुराष्ट्रीय फार्मा कंपनियों और व्यक्तियों द्वारा इसके बारे में असहमति व असहयोग दिखाया जा रहा है।

इस याचिका के माध्यम से, कोविड -19 के संकट से मानवता को बचाने के लिए, हम निम्नलिखित निवेदन करते हैं:

1. विश्व व्यापार संगठन, बौद्धिक संपदा अधिकार के प्रावधानों में छूट दे।
2. वैश्विक दवा निर्माता (वैक्सीन) कंपनियां स्वेच्छा से, मानवता के लिए, अन्य निर्माताओं को प्रौद्योगिकी हस्तांतरण सहित पेटेंट मुक्त अधिकार दें।
3. सरकार अन्य दवा निर्माताओं (वैक्सीन व दवाईयां) को अनिवार्य लाइसेंस देने के लिए अपने संप्रभु अधिकारों का उपयोग करने सहित आवश्यक कदम उठाये।
4. कोरोना के खिलाफ लड़ने के लिए एवं वैक्सीन और दवाओं के वैश्विक उपलब्धता की सुविधा के लिए, सभी संबंधित व्यक्तियों और संगठनों को बढ़-चढ़कर आगे आना चाहिए।

आइए हम इस पुनीत कार्य के लिए एकजुट होकर आगे आएं।

कृपया याचिका पर हस्ताक्षर करने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।

https://joinswadeshi.com/form2/

वैक्सीन का उत्पादन बढ़ाना होगा

पेटेंट कानून से मुक्ति तथा कम्पल्सरी लाइसेंस पर कार्य करे सरकार- धनपत राम

स्वदेशी जागरण मंच के अ.भा. सहसंयोजक डॉ.धनपत राम अग्रवाल ने कहा है कि कोरोना महामारी से बचाव के लिए एकमात्र आशा वैक्सीनेशन ही है। भारत की लगभग 138 करोड़ जनसंख्या के लिए 200 करोड़ से ज्यादा वैक्सीन चाहिए। वैक्सीन का उत्पादन बढ़ाना होगा। डॉ.धनपतराम 14 मई को इस विषय पर एक वेबीनार को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि पेटेंट कानून में स्वैच्छिक लाइसेंस का प्रावधान है। वैक्सीन विकसित करने वाली कम्पनी अन्य दवा-कम्पनियों को स्वैच्छिक लाइसेंस दे ताकि वैक्सीन उत्पादन बढ़े। यदि निर्माता-कम्पनियां स्वैच्छिक लाइसेंस जारी नहीं करती हैं तो पेटेंट अधिनियम की धारा 84 के अंतर्गत सरकार पेटेंट वाली कम्पनी का अधिकार समाप्त कर किसी अन्य कम्पनी या कम्पनियों को वैक्सीन बनाने के लिए कम्पल्सरी लाइसेंस जारी कर सकती है। धारा 92 के अंतर्गत वैक्सीन का फार्मूला एवं तकनीक (Technology) अन्य कम्पनियों को ट्रान्सफर किया जा सकता है।

डॉ. धनपत राम ने बताया कि यद्यपि भारत ने दक्षिण अफ्रीका व अन्य देशों के साथ मिलकर WTO में कोविड-वैक्सीन को पेटेन्ट-फ्री करने का प्रस्ताव रखा हुआ है, परन्तु प्रथम तो यह एक लम्बी प्रक्रिया है, द्वितीय यह कि सभी देश इसके लिए सहमत हों। विश्व के राष्ट्राध्यक्षों तथा WTO पर दबाव बनाने के लिए ही स्वदेशी जागरण मंच हस्ताक्षर अभियान चला रहा है।

जोधपुर प्रांत द्वारा आयोजित ऐसी ही एक वेबीनार को मुख्य वक्ता खुशबू नेवतिया तथा मुख्य अतिथि धीरज अग्रवाल ने संबोधित किया।

संसाधन जुटाने होते हैं। वैक्सीन बन जाने पर उसका परीक्षण करना होता है। इस सारी प्रक्रिया में करोड़ों-अरबों रुपये खर्च होते हैं। इसलिए जिस दवा कम्पनी ने वैक्सीन का विकास कर लिया, उसे पेटेंट मिल जाता है।

अब सार यह है कि या तो पेटेंटधारी कम्पनी उक्त वैक्सीन बना सकती है, या फिर जिस कम्पनी को उसने लाइसेंस दे दिया है, वह कम्पनी वैक्सीन बना सकती है। उस दूसरी कम्पनी को पेटेंटधारी कम्पनी अपने वैक्सीन का फार्मूला व तकनीकी (टेक्नोलॉजी) बता देती है। यानि हर कोई दवा कम्पनी वैक्सीन नहीं बना सकती। पेटेंट कानून इसमें बाधक है। सभी देशों में है यह पेटेंट कानून, और, प्रगति के लिए आवश्यक भी है। परन्तु इस वैश्विक-महामारी के समय जब तक पूरा विश्व कोरोना-मुक्त नहीं हो जाता, खतरा सबको बना रहेगा। अधिकतम लोगों का टीकाकरण ही इसका उपाय है। इसलिए सर्वजन हिताय व विश्व के कल्याण के लिए, (क्योंकि इस समय विश्व के कल्याण में ही सबका बचाव है) यह आवश्यक है कि कोरोना-वैक्सीन के मामले में पेटेंट के प्रावधान में ढील दी जाए तथा जो भी दवा-कम्पनी वैक्सीन बनाना चाहे, उसे पेटेंटधारी कम्पनी अपना फार्मूला व तकनीकी बता दें।

यहां यह भी जानना आवश्यक है कि विश्व स्तर पर पेटेंट संबंधी कानून का नियंत्रण 'विश्व व्यापार संगठन' (WTO) के पास है। सभी देश उसके सदस्य हैं। अतः WTO को पेटेंट संबंधी ढील दिए जाने का निर्णय लेना होगा।

भारत ने दक्षिण अफ्रीका व कई अन्य देशों के साथ मिलकर दिसम्बर 2020 में ही कोरोना वैक्सीन को पेटेंट फ्री करने का प्रस्ताव WTO में प्रस्तुत कर दिया था। नियम यह है कि जब सारे देश इस प्रस्ताव का समर्थन करेंगे- तभी यह सम्भव होगा। कई देश तथा कोरोना वैक्सीन का विकास करने वाली कम्पनियाँ इस प्रस्ताव का विरोध कर रही हैं। सम्भावना है कि जब करोड़ों-करोड़ों लोगों की याचिका WTO, राष्ट्रप्रमुखों एवं कोरोना वैक्सीन बनाने वाली कम्पनियों के पास पहुँचेंगी तो उनका दिल पसीज जाए और कोरोना वैक्सीन पेटेंट-फ्री हो जाए। इसीलिए स्वदेशी जागरण मंच ने भारत में तथा अन्य देशों में वहां के संबंधित NGO ने यह अभियान छेड़ा हुआ है। आप भी उक्त याचिका पर हस्ताक्षर करने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें। **https://joinswadeshi.com/form2**

नारद जयंती पर पाथेय कण के यू-ट्यूब चैनल का शुभारम्भ

ब्रह्मा जी के मानस पुत्र और सृष्टि के प्रथम पत्रकार देवर्षि नारद की जयंती ज्येष्ठ कृष्ण एकम् (इस बार 27 मई,2021) को मालवीय नगर स्थित पाथेय भवन में मनाई गई।

नारद जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के पश्चात् आयोजित विचार गोष्ठी को पाथेय कण के प्रबंध संपादक श्री माणक चन्द ने संबोधित करते हुए कहा कि ब्रह्मा के मानस पुत्र देवर्षि नारद आदि पत्रकार थे। उनका पक्ष और विपक्ष दोनों से संवाद रहता था। नारद मुनि सर्वग्राही थे। कार्यक्रम के अंत में पाथेय कण के यू-ट्यूब चैनल का भी शुभारम्भ किया गया। कार्यक्रम में संघ के क्षेत्रीय सह प्रचार प्रमुख श्री मनोज कुमार उपस्थित थे।

जोधपुर विश्व संवाद केन्द्र द्वारा भी विभाग स्तर पर वर्चुअल कार्यक्रम आयोजित कर देवर्षि नारद को याद किया गया। इस कार्यक्रम में विभिन्न समाचार पत्र-पत्रिकाओं तथा इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया से जुड़े संवाददाताओं और पीएचडी स्कॉलर्स ने भाग लिया। कोटा के पत्रकार मनीष गौतम ने कहा कि देवर्षि नारद अपना काम एक पत्रकार के रूप में पूरी लगन व ईमानदारी के साथ पूर्ण करते थे। लोकमंगल की कामना से जन-जन में अपनी संवाद शैली एवं सम्पर्क कला से अलख जगाने वाले आदि पत्रकार नारदजी का संचार दर्शन भारतीय पत्रकारिता को लोकमंगल की राह दिखाता है।

श्रद्धांजलि

बिछुड़ गए कई कार्यकर्ता

नरेन्द्र सिंह गढ़ी

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व प्रचारक नरेन्द्र सिंह गढ़ी का 12 मई,2021 की रात्रि उदयपुर के एक अस्पताल में कोरोना से निधन हो गया। 1 अगस्त,1960 को बांसवाड़ा के गढ़ी ग्राम में आपका जन्म हुआ। आप उदयपुर, चित्तौड़, जयपुर, चूरू तथा सवाईमाधोपुर में जिला प्रचारक रहे। आपने विश्व हिन्दू परिषद व भारतीय किसान संघ में जयपुर प्रांत संगठन मंत्री का दायित्व संभाला। कुछ वर्षों पूर्व प्रचारक जीवन से मुक्त होकर आप पूर्ण रूप से सामाजिक कार्यों में संलग्न थे।

संगठन और समाज की सेवा करते रहे संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता **श्री देवी नारायण पारीक** (सांगानेर विभाग के पूर्व संघचालक) तथा राजसमंद के **श्री सुन्दरलाल पालीवाल** जिन्होंने सम्पूर्ण जीवन एक श्रेष्ठ स्वयंसेवक के रूप में जिया, आज हमारे बीच नहीं रहे।

पाथेय कण परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

घुमन्तु जाति प्रांत सह संयोजक का स्वर्गवास

मृत्युभोज की कुप्रथा बंद करने का अनुकरणीय कार्य

घुमंतु जाति प्रांत सह संयोजक भोमाराम गुर्जर का कोरोना से गत 14 मई को स्वर्गवास हो गया। वे नावां सिटी के नजदीक गांव पांचोता के रहने वाले थे तथा व्याख्याता पद पर कार्यरत थे। उनके पुत्र युगानंद गुर्जर ने गंगा प्रसादी के रूप में होने वाले मौसर (मृत्युभोज) को नहीं करने का निर्णय लेकर समाज के सामने एक आदर्श प्रस्तुत किया है, जो सभी के लिए अनुकरणीय है।

पाथेय कण परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके पुत्र युगानंद का अभिनन्दन करता है।

मद्रास उच्च न्यायालय का फैसला

मुस्लिम बहुल क्षेत्र में हिन्दू धार्मिक आयोजनों पर प्रतिबंध या शर्तें लगाना गलत

मुस्लिम तुष्टीकरण में लगी सरकारें क्या सबक लेंगी?

हाल ही में धार्मिक अधिकार से जुड़े एक मामले में मद्रास हाई कोर्ट ने एक ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए कहा है कि मुस्लिम बहुल हो गए क्षेत्र में हिन्दुओं को अपने परम्परागत धार्मिक आयोजन का पूरा अधिकार है। प्रशासन द्वारा उन पर शर्तें थोपना गलत है।

भारत में देखा गया है कि जैसे ही किसी क्षेत्र में मुसलमानों की जनसंख्या बढ़ जाती है, उन्हें हिन्दुओं के धार्मिक आयोजनों पर आपत्ति होने लगती है। ऐसा ही एक मामला तमिलनाडु से आया है। तमिलनाडु के पेरम्बलूर जिले के कलाथुर गांव में 2012 के पहले वहां का मुस्लिम समाज

बहुसंख्यक हिन्दू समाज के साथ आराम से रह रहा था। परन्तु, 2012 आते-आते मतांतरण के परिणामस्वरूप यह क्षेत्र मुस्लिम बहुल हो गया। तब मुसलमानों ने हिन्दुओं के मंदिरों में होने वाले आयोजनों का विरोध प्रारंभ कर दिया। इन मंदिरों के तीन दिन तक चलने वाले आयोजनों में जब सड़कों व गलियों से परम्परानुसार जुलूस

मेघालय उच्च न्यायालय ने कहा था-

"भारत को इस्लामिक देश बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।"

मेघालय उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति सुदीप रंजन सेन ने एक मुकदमे में फैसला देते हुए लिखा था, ''मैं यह स्पष्ट करता हूँ कि किसी भी व्यक्ति को भारत को इस्लामिक देश बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। न्यायमूर्ति ने मोदी सरकार में विश्वास जताते हुए कहा कि वे भारत को इस्लामिक राष्ट्र नहीं बनने देंगे। 10 दिसम्बर, 2018 को दिए गए इस निर्णय में उन्होंने यह भी लिखा, ''पाकिस्तान ने अपने को इस्लामिक देश घोषित किया था। चूंकि भारत का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था, इसलिए भारत को हिन्दू राष्ट्र घोषित किया जाना चाहिए था, लेकिन इसे धर्मनिरपेक्ष राष्ट्र बनाए रखा।''

न्यायमूर्ति सेन ने यह भी कहा, ''मैं इस देश में पीढ़ियों से रहने वाले मुस्लिम भाइयों और बहिनों के खिलाफ नहीं हूँ। उन्हें इस देश में शांतिपूर्वक रहने का पूरा अधिकार है।'' उन्होंने सरकार से समान नागरिक संहिता बनाने की अपील भी की तथा कहा कि जो भी भारतीय कानून और संविधान का विरोध करे उसे देश का नागरिक नहीं माना जाना चाहिए।

हालांकि बाद में मेघालय हाईकोर्ट की खण्डपीठ ने न्यायमूर्ति मोहम्मद याकूब मीर की अध्यक्षता में उक्त फैसले को बदल दिया और कहा कि वह फैसला संवैधानिक सिद्धान्तों के अनुरूप नहीं है।

निकाला जाता तो मुसलमानों द्वारा उस पर पत्थरबाजी की जाने लगी। मुसलमानों का कहना था कि मंदिरों के उत्सवों की परम्पराएं एवं पूजा पद्धति इस्लाम के विरुद्ध हैं, इसलिए उन्हें रोक देना चाहिए। जुलूस मुस्लिम बहुल क्षेत्रों से नहीं गुजरना चाहिए।

मामला पहले प्रशासन के पास, फिर निचली अदालत में गया। दोनों ही जगह कुछ पाबन्दियों के साथ उत्सव के आयोजन की अनुमति दी गई। मामला 2015 में मद्रास हाईकोर्ट पहुँचा। लम्बी सुनवाई के पश्चात् न्यायमूर्ति पी. वेलमुरगन एवं न्यायमूर्ति एन. किरुबकरन की बेंच ने निर्णय देते हुए कहा कि यदि इस मामले में मुस्लिम पक्ष की दलील को मान लिया जाए तो फिर शेष भारत के क्षेत्रों में ऐसी स्थिति बन जाएगी कि अल्पसंख्यक धर्म के लोग कोई भी त्योहार या जुलूस नहीं निकाल पाएंगे। कोर्ट ने यह भी कहा कि दशकों से चली आ रही परम्परा को धार्मिक अहिष्णुता के नाम पर रोका नहीं जा सकता। सड़कों, गलियों पर कोई धर्म दावा नहीं कर सकता। वे सबके लिए हैं। कोर्ट ने बिना किसी प्रतिबंध के हिन्दुओं को जुलूस निकालने की अनुमति देते हुए कहा कि कानून व्यवस्था की किसी भी तरह की समस्या होने पर पुलिस को हस्तक्षेप करना होगा।

न्यायालय ने कहा कि पूरा मामला साफ था। इसमें विवाद का प्रश्न ही नहीं था। स्थानीय प्रशासन ने आखिर इसे विवाद का रूप कैसे लेने दिया? उत्सवों पर रोक या परम्पराओं पर शर्तें थोपना एक वर्ग के मूलभूत अधिकारों का हनन था। उच्च न्यायालय ने यह भी कहा, कि यह अत्यंत दु:ख का विषय है कि हिन्दुओं को, भारत में बहुसंख्यक होते हुए भी, अपनी पूजा जैसे मूल अधिकारों की रक्षा के लिए न्यायालय की शरण में जाना पड़ रहा है।

मद्रास हाईकोर्ट का यह फैसला मुस्लिम तुष्टीकरण करने वाली सरकारों और लिबरलों के मुंह पर तमाचा है। क्या ऐसी सरकारें इस निर्णय से कोई सबक लेंगी?●

कोरोना महामारी में स्वरा भास्कर, कन्हैया कुमार, योगेन्द्र यादव और प्रशांत भूषण कहाँ हैं?

वेद माथुर

हमारे देश में आंदोलन करवाने वाले कुछ प्रोफेशनल लोग हैं। इनमें से अधिकांश का रोजगार और आय का माध्यम आंदोलन करना और करवाना है। इसलिए इन्हें आंदोलनजीवी भी कहा जाता है। अपने आंदोलन के इस 'बिजनेस' से ये करोड़पति ही नहीं वरन अरबपति भी हो गए हैं। ये नए-नए मुद्दे ढूंढ कर लाते हैं – जैसे असहिष्णुता, लिंचिंग, सीएए और न जाने क्या-क्या?

इन आंदोलनजीवियों में कन्हैया कुमार, स्वरा भास्कर, राणा अयूब, प्रशांत भूषण, योगेंद्र यादव जैसे कुछ जाने-माने नाम हैं। इनका एक मुद्दा टाँय-टाँय फिस्स होता है तो ये नया मुद्दा पकड़ लेते हैं। इनके अपने आंदोलन फ्लॉप हो जाते हैं तब कोई और आंदोलन कर रहा होता है तो उसकी गोद में जाकर बैठ जाते हैं।

खैर, समाज के विभिन्न मुद्दों के प्रति इतने 'जागरूक' रहने वाले ये लोग इस कोरोना महामारी में गायब हैं। कन्हैया कुमार कहीं नजर नहीं आ रहे। काश! स्वरा भास्कर सोनू सूद द्वारा किए जा रहे कार्यों का 1% भी काम करके ही दिखा देती।

योगेंद्र यादव किसान आंदोलन के माध्यम से अराजकता के साथ-साथ कोरोना वायरस फैलाने में लगे हैं। किसी महामारी पीड़ित को दो रोटी जुगाड़ करवाने में उन्होंने कभी मदद नहीं की। प्रशांत भूषण भी अरबपति हैं पर किसी की सहायता के लिए जेब से धेला भी नहीं निकाला और राणा अयूब अपनी सहेली बरखा दत्त के साथ मिलकर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि निरंतर खराब करने में लगी है।

अच्छा होता कि ये सारे समाजसेवी कोरोनाकाल में जनता की सेवा करने के लिए आगे आते। इन लोगों ने प्रवासी मजदूरों के पलायन के समय बड़ी हाय-तौबा मचायी। परन्तु इन लोगों ने किसान आंदोलन के समय किसानों के लिए भोजन से लेकर मालिश तक की व्यवस्था की, ताकि आंदोलन की आग में घी डाला जा सके। लेकिन पलायन करते मजदूरों को पानी तक नहीं पिलाया।

बरखा दत्त ने व्यवस्था को बदनाम करने के लिए अपने पिता की मृत्यु को भी नहीं छोड़ा

बरखा दत्त के पिता का कोरोना के कारण निधन होना एक दुःखद समाचार है, परन्तु उसने अपने पिता की मृत्यु को भी सरकार विरोधी समाचार बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने अपने पिता की बीमारी के बारे में किए एक ट्वीट में लिखा **''मेरे पिता ठीक से सांस नहीं ले पा रहे हैं। ऑक्सीजन वाली कोई एंबुलेंस नहीं मिली, इसलिए रास्ते में हालत और खराब हो गई। गुस्सा आ रहा है लेकिन घटिया सिस्टम को कैसे ठीक किया जाए?''** एक विदेशी चैनल सीएनएन के किम ब्रुनहुबर के साथ इंटरव्यू में बरखा दत्त ने कहा, 'जो प्राइवेट एंबुलेंस उन्हें हॉस्पिटल लेकर गई, उसमें लगा ऑक्सीजन सिलेंडर काम नहीं कर रहा था।''

इस साक्षात्कार के बारे में ट्वीट करते हुए ब्रुनहुबर ने लिखा,**'' बरखा दत्त ने मुझे बताया कि एंबुलेंस में ऑक्सीजन नहीं थी, श्मशान में (दाह-संस्कार के लिए) कोई जगह नहीं थी। कितनी हृदय विदारक स्थिति है।''**

लेकिन एंबुलेंस के ड्राइवर ने बरखा दत्त को झूठा बताते हुए कहा है कि एंबुलेंस में ऑक्सीजन का एक बड़ा सिलेंडर था, जिसका उपयोग बरखा दत्त के पिता ने किया था।

उक्त एंबुलेंस के ड्राइवर सोनू का वक्तव्य- ''एम्बुलेंस में ऑक्सीजन का सिलेंडर भरा हुआ था। बरखा दत्त ने ऑक्सीजन के बारे में पूछा था और स्वयं ने ऑक्सीजन के प्रवाह की जांच भी की थी। हम बिना किसी समस्या के अस्पताल पहुँचे थे। मरीज बिना किसी परेशानी के एंबुलेंस से नीचे उतर गया था। वह क्यों झूठ बोल रही हैं? मैंने उन्हें दिखाया था कि ऑक्सीजन सिलेंडर ठीक से काम कर रहा है। ''

सेवा इंटरनेशनल को ट्विटर द्वारा डोनेशन पर
वामपंथियों-सेक्युलरों द्वारा विरोध

ट्विटर के मुख्य प्रबन्धक अधिकारी जैक डॉर्सी ने कोरोना से संघर्ष में भारत को 110 करोड़ रुपये (15 मिलियन डॉलर) दान दिए हैं। यह राशि भारत के तीन एनजीओ (गैर सरकारी संगठन) को मिलेगी। इन तीन में 'सेवा इंटरनेशनल'भी एक संस्था है, जिसे 2.5 मिलियन डॉलर (15 करोड़ रुपये) दिए गए हैं।

सेवा इंटरनेशनल सेवा से संबंधित संगठन है जो अमेरिका के टेक्सास शहर से चलाया जा रहा है। इसने अब तक प्राप्त सहायता राशि से भारत में ऑक्सीजन कंसंट्रेटर, वेंटिलेटर व अन्य आवश्यक मशीन तथा उपकरण खरीदे हैं।

परन्तु 'सेवा भारती' या संघ से जुड़ी संस्था को डोनेशन दिया जाना तथाकथित प्रगतिवादियों-वामपंथियों-सेक्यूलरों को हजम नहीं हो रहा है। इस महामारी के समय भी वे अपनी विषैली प्रवृत्ति को छोड़ नहीं पा रहे हैं। ऐसे लोगों ने सेवा इंटरनेशनल को दिए डोनेशन के लिए जैक डॉर्सी की निंदा की है और मांग की है कि उसे दिया गया दान वापस लिया जाए।

बता दें कि कोरोना की पहली लहर में देशभर में सेवा कार्यों के लिए 'इंडिया-टुडे' मीडिया ग्रुप ने 'सेवा भारती' को पुरस्कृत किया था। इस दूसरी लहर में भी गैर सरकारी स्तर पर सबसे ज्यादा सेवा कार्य सेवा भारती के माध्यम से ही किए जा रहे हैं।

अमर फल का स्वाद

एक बार एक पिता ने अपने पुत्र को पैसे देकर फल लाने के लिए बाजार भेजा। जब पुत्र रास्ते से बाजार जा रहा था तो उसने सड़क के किनारे कुछ लोगों को फटे वस्त्रों से युक्त देखा। वे लोग भूख से व्याकुल थे। बालक बाजार पहुँचा और फलों के स्थान पर खाने का सामान लेकर उन लोगों को दिया। भोजन प्राप्त कर वे लोग प्रसन्न थे। बालक भी प्रसन्नता का भाव लेकर घर वापस आ गया। घर आते ही पिता ने पूछा–''खाली हाथ दिखाई दे रहे हो! क्या तुम फल नहीं लाये?''

''पिताजी, क्षमा करें। मैं फल नहीं ला सका। पर, अमर फल जरूर लाया हूँ'' बालक ने बड़ी नम्रता से उत्तर दिया।

'' क्या मतलब है तुम्हारे कहने का? कहाँ है अमर फल? मैं भी तो देखूं। पिता की आवाज में थोड़ा गुस्सा था।''

पिताजी ! रास्ते में भूख से व्याकुल, दुर्बल और जीर्ण-शीर्ण अवस्था में कुछ लोगों को देखकर मेरे से रहा नहीं गया। मैंने उन पैसों से फलों के बजाय खाने का जरूरी सामान खरीदा और उन लोगों में बांट दिया। सोचा- चलो, कम से कम उनकी आज की भूख तो मिट जायेगी। फल तो हम कल भी खा सकते हैं। वैसे भी फल का स्वाद तो क्षणिक ही रहता है परन्तु इस अमर फल का स्वाद तो सदा रहने वाला है। जबकि शेष फल तो समय के साथ नष्ट हो जाते हैं।

बालक की आँखों में सेवा/समर्पण की चमक साफ दिखाई दे रही थी। पुत्र की बातें सुनकर पिता के मन को संतोष के साथ गर्व का भी अनुभव हो रहा था। यही बालक आगे चलकर संत रघुदास के नाम से विख्यात हुआ। ●

बाल प्रश्नोत्तरी

जीतें पुरस्कार। बाल मित्रों! पाथेय कण 1 अप्रैल, 2021 का अंक पढ़ने के पश्चात् निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें। अपने उत्तर 'उत्तर सीट' में भरकर 79765 82011 पर व्हाट्सअप करें। प्रथम 10 बाल मित्रों के नाम पाथेय कण में प्रकाशित किए जायेंगे तथा प्रथम 5 को पुरस्कृत भी किया जाएगा।

1. भव्य राममंदिर निर्माण के लिए देश भर से कितने परिवारों ने अपना निधि समर्पण किया?
(क) 10 करोड़ (ख) 15 करोड़ (ग) 12 करोड़ (घ) 20 करोड़

2. श्री राम जन्मभूमि मंदिर निधि समर्पण अभियान पूरे देश में कितने दिन चला?
(क) 55 दिन (ख) 44 दिन (ग) 50 दिन (घ) 35 दिन

3. कलकत्ता के किस कॉलेज में बी.ए.आनर्स के लिए सुभाष बाबू को प्रवेश दिलाया गया?
(क) श्रीराम कॉलेज (ख) मौलाना आजाद कॉलेज (ग) स्काटिश चर्च कॉलेज (घ)प्रेसीडेंसी कॉलेज

4. 24 वें तीर्थंकर भगवान महावीर की जयंती किस तिथि को मनाई जाती है?
(क) चैत्र शु. 13 (ख) चैत्र शु. 5 (ग) चैत्र कृ. 12 (घ) चैत्र कृ.6

5. प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के महानायक वीर कुँवर सिंह का शहादत दिवस कब आता है?
(क) 20 अप्रैल (ख) 26 अप्रैल (ग) 21 अप्रैल (घ) 28 अप्रैल

6. विश्व पुस्तक दिवस कब मनाया जाता है?
(क) 23 अप्रैल (ख) 15 अप्रैल (ग) 18 अप्रैल (घ) 10 अप्रैल

7. कृषि क्षेत्र में विशेष दृष्टि रखते हुए संघ ने भूमि सुपोषण अभियान कब से प्रारम्भ किया?
(क) 10 अप्रैल (ख) 13 अप्रैल (ग) 15 अप्रैल (घ) 20 अप्रैल

8. राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की अ.भा.प्रतिनिधि सभा की बैठक पिछले दिनों कहाँ सम्पन्न हुई?
(क) बेंगलुरु (ख) केरल (ग) नागपुर (घ) रायपुर

9. सर्व सम्मति से चुने गये संघ के नये सरकार्यवाह का नाम बताइए?
(क) डा.कृष्ण गोपाल (ख) श्री दत्तात्रेय होसबाले (ग) डा.मनमोहन वैद्य (घ) श्री अरुण कुमार

10. संघ की अ.भा.प्र.सभा में दो प्रस्ताव पारित हुए, इनमें दूसरा प्रस्ताव किस से सम्बन्धित था?
(क) राम मंदिर (ख) कुटुम्ब प्रबोधन (ग) पर्यावरण संरक्षण (घ) कोविड महामारी

उत्तर सीट – 1.( ) 2.( ) 3.( ) 4.( ) 5.( ) 6.( ) 7.( ) 8.( ) 9.( ) 10.( )

पहचानो तो यह वीरांगना कौन है?

बाल मित्रों! यहाँ एक वीरांगना का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं। संकेत के आधार पर चित्र को पहचानो और अपने ज्ञान की परीक्षा करो।

1. इनका बचपन का नाम मनु था।
2. ये झाँसी की महारानी थी।
3. 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में इन्होंने अंग्रेजों से डटकर लोहा लिया।

(उत्तर- रानी लक्ष्मीबाई)

पाक्षिक
पाथेय कण
1 जून, 2021

आर.एन.आई.पंजीयन क्र. 48760/87
डाक पंजीयन संख्या JAIPUR CITY /202/2021-23

अग्रिम शुल्क बिना प्रेषण की अनुमति लाइसेंस संख्या
JAIPUR CITY/ WPP - 01/2021-23

आगामी पक्ष के विशेष अवसर

16 से 30 जून, 2021
(ज्येष्ठ शु.6 से आषाढ़ कृ.6, वि.सं. 2078)

जन्म दिवस

18 जून (1861)	– बाबू देवकीनंदन खत्री जयंती
ज्येष्ठ शु.11 (21 जून)	– प.रामप्रसाद बिस्मिल जयंती/ गायत्री जयंती
ज्येष्ठ शु. 12 (22 जून)	– सुपार्श्वनाथ जयंती (7वें)
ज्येष्ठ पूर्णिमा (24 जून)	– संत कबीर जयंती
24 जून (1863)	– इतिहासकार विश्वनाथ काशीनाथ राजवाड़े जयंती
27 जून (1838)	– बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय जयंती
आषाढ़ कृ.6 (30 जून)	– 6वें गुरु हरगोविन्द जयंती

बलिदान दिवस/पुण्यतिथि

16 जून (1918)	– क्रांतिकारी नलिनीकान्त बागची की शहादत
16 जून (712)	– महाराजा दाहिरसेन का बलिदान
17 जून (1996)	– श्री बाला साहब देवरस की पुण्यतिथि
18 जून (1576)	– हल्दीघाटी युद्ध में झालामान का बलिदान
18 जून (1858)	– महारानी लक्ष्मीबाई का बलिदान
19 जून (1942)	– बाल मुकुन्द बिस्सा की शहादत
21 जून (1940)	– डॉ. केशव बलिराम हेडगेवार की पुण्यतिथि
22 जून (1858)	– प्रथम स्वातंत्र्य समर में अमर चंद बांठिया को फांसी
23 जून (1953)	– डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी की शहादत
24 जून (1564)	– महारानी दुर्गावती का बलिदान
27 जून (1963)	– दादाराव परमार्थ की पुण्यतिथि
27 जून (1839)	– महाराजा रणजीत सिंह की पुण्यतिथि
29 जून (1965)	– स्वामी ध्रुवानन्द सरस्वती की पुण्यतिथि

महत्वपूर्ण अवसर/घटनाएं

19 जून (1677)	– नेताजी पालकर शुद्धि दिवस (परावर्तन दिवस)
ज्येष्ठ शु.10(20 जून)	– गंगा दशहरा, सेतुबंध रामेश्वरम् प्रतिष्ठा दिवस
21 जून	– अन्तरराष्ट्रीय योग दिवस
23 जून	– अन्तरराष्ट्रीय ओलंपिक दिवस
ज्येष्ठ शु. 13 (23 जून)	– हिन्दू साम्राज्य पुनर्स्थापना दिवस (1674 ई.)
25 जून (1975)	– देश में आपातकाल लगा
29 जून	– राष्ट्रीय सांख्यिकी दिवस

पंचांग-ज्येष्ठ
(शुक्ल-पक्ष)

युगाब्द-5123, वि.सं.-2078, शाके-1943
(11 से 24 जून, 2021)

चतुर्थी व्रत	– 14 जून
श्री महेश नवमी	– 19 जून
गंगा दशमी	– 20 जून
निर्जला एकादशी व्रत	– 21 जून
प्रदोष व्रत	– 22 जून
पूर्णिमा व्रत	– 24 जून

ग्रह स्थिति

चन्द्रमा : 11 से 13 जून **मिथुन** राशि में, 14-15 जून स्व राशि **कर्क** में, 16-17 जून **सिंह** राशि में, 18 से 20 जून **कन्या** राशि में, 21-22 **तुला** राशि में तथा 23-24 जून नीच की राशि **वृश्चिक** में गोचर करेंगे।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष में **गुरु**, **मंगल** और वक्री **शनि** क्रमशः कुंभ, कर्क व मकर राशि में स्थित रहेंगे। गुरु कुंभ राशि में रहते हुए 20 जून को रात्रि 8.35 बजे वक्री होंगे।

इसी प्रकार **राहु** और **केतु** भी वृष व वृश्चिक राशि में रहेंगे। **बुध देव** वृष राशि में रहते हुए 22 जून को रात्रि 3.30 बजे मार्गी होंगे।

सूर्य 15 जून को प्रातः 6.01 बजे वृष से मिथुन में प्रवेश करेंगे। **शुक्र** 22 जून को दोपहर 2.21 बजे मिथुन से कर्क राशि में प्रवेश करेंगे।

स्वत्वाधिकारी पाथेय कण संस्थान के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक माणक चन्द
द्वारा कुमार एण्ड कम्पनी,ए-10,22 गोदाम औद्योगिक क्षेत्र, जयपुर से मुद्रित
प्रकाशकीय कार्यालयः पाथेय भवन, 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र, मालवीय नगर, जयपुर-302017
सम्पादक - रामस्वरूप अग्रवाल
प्रेषण दिनांक 1,2,3,4 व 5 जून, 2021 आर.एम.एस.(पी.एस.ओ.) जयपुर

प्रतिष्ठा में _____
_____
_____